ब्रजभाषा ग्रंथ क्रम संख्या ३७-३८-३९

❀ ब्रजभाषाग्रन्थत्रय ❀

श्रीचैतन्यचन्द्रामृतकणिका (१)
श्रीरासपंचाध्यायी (२)
भजनपद्धति (३)

प्रकाशक :—
बाबा कृष्णदास
(ग्वालियर मन्दिर)
कुसुमसरोवर
पो० राधाकुंड (मथुरा)

(विजयादशमी)
सम्वत् २०१९
मूल्य ।।)

दो शब्द

चैतन्यचन्द्रामृतकणिका—इसके रचयिता वृन्दावन श्रीराधारमणजी ठाकुर के घराने में प्रसिद्ध कवि, गोस्वामी श्री कृष्णचरणजी (उपनाम) कृष्णकवि हैं। प्रसिद्ध विद्वान् गो० वलदेवलालजी आपके पिता थे। उक्त ग्रन्थकार के पुत्र गो० नीलमणिजी महाराज से यह ग्रन्थ हमें मिला। जो कि श्रीपाद प्रवोधानन्द सरस्वती के प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ "श्री चैतन्यचन्द्रामृत" का सारगर्भ आधार ले प्रत्येक श्लोक का छन्द वन्ध पद्यानुवाद है। इसमें श्रीमन्महाप्रभुचैतन्यदेव की महिमा सर्वोत्कर्षता रूप से दिखलाई गई है।

रासपंचाध्यायीभाषा—रचयिता श्रीगोविन्दचरणदासजी, आपने वृन्दावन में सम्वत् १८८६ साल कार्त्तिकमास द्वादशी तिथी रविवार को इसकी संपूर्त्ति की। इसकी हस्तलिखित कापी वंगाक्षर में है जो कि किसी वंगवासी महात्मा के द्वारा लिखी गई है। अतः इसका प्रकाशन शुद्ध रूप से न होकर उसी रूप से हुआ जैसा कि कापी में मौजूद है।

भजनपद्धति—रचनाकाल सम्वत् १८४० है। इसमें स्पष्ट रूप से ग्रन्थकार का नामोल्लेख नहीं है परन्तु, शेष में "सम्वत् १८५० स्वअक्षरमिदं गोकुलदासस्य" ऐसा उल्लेख है। इससे गोकुलदासजी इसके रचयिता हैं यह श्रीप्रभुदयालमीतलजी का अनुमान निराधार है। क्योंकि जब कि १० वर्ष पश्चात् ही गोकुलदासने इसका नकल किया तो ग्रन्थकार स्पष्ट ही पृथक प्रतीत होते हैं। आप श्रीराधादामोदरठाकुर जी के गोस्वामी श्रीगोविन्दलालजी जो कि श्रीपादजीवगोस्वामी जी की नवमी पीढ़ी में हुए उनके शिष्य थे। आपने उन सबकी सिद्ध प्रणाली इस ग्रंथ में दी है। अस्तु भजन साधन में यह बड़ी उपादेय वस्तु है। (कृष्णदास)

8/25—

श्रीश्रीचैतन्यचंद्रामृतकणिका

चखन चखावन प्रेमरस, नन्द सुवन चैतन्य।
प्रकटे नदिया नगर में, सो वन्दूं श्रुति धन्य ।। १
पाय जनम जिन कियो नहिं, धर्म सुजन जन संग।
वन्दों जिनकी कृपा सों, नाचत प्रेम उमंग ।। २
हरि रस मदिरा मत्त जिन, कियो सकल संसार।
श्रीश ब्रम्ह जाने नहीं, महिमा रूप अपार ।। ३
योग यज्ञ जप तप नियम, निगमागम नहिं जाय।
सोई पावत पुरुष जब, प्रकटे श्री हरि आय ।। ४
अहह गहन गौरांग को, को जाने यह खेल।
अति पापी पावन किये, धर्म भक्ति निज मेल ।।५
जो बिन पूछे बिन कहे, बिन आदर सत्कार।
देत बुलाय बुलाय कर, दीनन कर सत्कार ।। ६
वज्र हृदय नवनीत सम, पापी परम पुनीत।
किये गौर वपुधार जिन, भज मन तज जगतीत ।। ७
मुक्ति नरक सम देव पुर, लखत ख पुष्प समान।
गौर हरि के दास कूँ, कर मन ताको ध्यान ।। ८
चरण सुधारस पान सौं, मत्त गौर के दास।
विधि सुर सिद्ध मुनीन को, करत सदा उपहास ।। ९
दनुज दमन सृष्टी करण, हरि हर भूतल भार।
कहा कियो श्री गौर ने, तारो सब संसार ।। १०
अमिय अयन चैतन्य को, कोटि चन्द्र मुख चन्द्र।
भुवन मांहि बाढ़ो निरख, वारिधि प्रेमानन्द ।। ११
वन्दौं श्री चैतन्य के, चरण कमल कर स्वार्थ।
पावत जाकी कृपा सो, प्रेमानिध पुरुपार्थ ।। १२

नाचत वाहु उठाय कर, गाय हरी के नाम।
देव देव चूड़ामणि, गौर होउ मम धाम ॥ १३
भक्त चकोरी चतुर चख, चाखत सो अविराम।
प्रकटो शची समुद्र में, गौर चन्द्र गुण धाम ॥ १४
चखन लखन नव प्रेममय, वृष्टी कर मो माहिं।
वास करोगे गौर कब, हृन्मन्दिर के माहिं ॥ १५
दुर्विचार रसमय महा, नाना भाव विकार।
राधा माधव रूप से, लखो गौर अवतार ॥ १६
मोर पिच्छ गुंजावली, देख सघन घनश्याम।
श्याम निरख प्रेमा विवस, होत गौर गुणधाम ॥ १७
अरुण वसन संध्याभ्रसम, अमिय अयन मुखचन्द्र।
गौर चन्द्र मो हृदय में, उदय करो स्वच्छन्द ॥ १८
गणना हित निज नाम की, गाँठ करत कटि दाम।
अश्रु पुलक रोमांच युत, सो पूरो मम काम ॥ १६
हरत हृदय को अंध तम, संतापन को नाश।
गौर चन्द्र नख चन्द्रिका, मो हिय करत प्रकाश ॥ २०
भ्रांत भये मुनिगण जहां, शुक न जानो जाय।
जो न बतायो कृष्ण ने, देत गौर अपनाय ॥ २१
ब्रह्म वेद की कथा अरु, शास्त्र लोक की रीति।
तबलों जबलों नहिं भई, गौर भक्त से प्रीत ॥ २२
प्रकट तेज प्रेमापगी, भक्ति विषय वैराग्य।
को कविगण नहिं कर सकें, गौरदास को त्याग ॥ २३
मधुकर सम मो मत्त मन, वदन नयन कर पद्म।
चरण कमल लख गौर के, रमत वहाँ कर सद्म ॥ २४
परिचर्या कर विष्णु की, तीरथ वेद विचार।
बिना गौर प्रिय कृपा के, को पायो श्रुति सार ॥ २५

अमृतोदधि को मथन कर, सार कोई जो पाय।
गौर चरण की कृपा बिन, कडवो सो मन भाय ॥ २६

मधुर भाषिता मुग्धता, विह्वलता गांभीर्य।
विनय विषय को त्याग के, गौर दास को वीर्य ॥ २७

कोई कोटिक गुरू करो, पढ़ो श्रुतिन को मर्म।
गौर कृपा बिन नहिं मिले, प्रेम भक्ति परधर्म ॥ २८

करत ध्यान वैराग्य को, कोटिन को उपहास।
स्वतः सिद्ध प्रेमापगे, गौर चरण के दास ॥ २६

अद्वैतादि भक्त गण, देख भये कृतकृत्य।
भाव विभूषित गौर को, अलख अनोखो नृत्य ॥ ३०

हैंगे हांगे ह्वेगये, भक्त जगत के माहिं।
गौर कृपा उन पर भई, यह जानूं मन माहिं ॥ ३१

अज्ञानी मुनि जनन को, गर्व करावत त्याग।
श्रुति शिर सेवित शचीसुत, भजे सोइ बड़ भाग ॥ ३२

सब साधन सों हीन भी, होय गौर को दास।
आश आपनी पूज कर, पर कौ नासे त्रास ॥ ३३

शरण गही जिन हरी की, करके पुन्य अगन्य।
अनुपासित चैतन्य कूँ, मैं नहिं मानू धन्य ॥ ३४

ब्रह्मवादि धिक यमी धिक, कर्मी धिक मन जान।
पायो जिन नहिं गौर मधु, ते नर पशू समान ॥ ३५

श्वान पुच्छ सूधो करण, परि सिंचन पाषाण।
श्री गुरु गौर कृपा बिना, इमि सब साधन जान ॥ ३६

सागर प्रेम पसार कूँ, भयो गौर अवतार।
लहै न जाने रत्न बहु, वो हेगो दे मार ॥ ३७

गौर प्रेम रस सिन्धु में, जो नहिं डूबो हाय।
भव सागर के बीच में, पड़ौ सो गोता खाय ॥ ३८

प्रेमामृत मय गौर ने, सागर दियो बहाय।
अबहु जो जन दीन हों, उनसे कहा बसाय ॥ ३९
अचैतन्य सम वो भयो, जिन न भजो चैतन्य।
शरणागत चैतन्य कूँ, वेदहु गावे धन्य ॥ ४०
गावत श्री गोविन्द गुण, प्रेम विवस सब गात।
जिन नहिं देखे गौर हरि, भक्त न समझे जात ॥ ४१
पंगु न लंघे गिरि शिखर, बीज बिना नहिं अन्न।
इमि गौराङ्ग कृपा बिना, भक्ति न पावे अन्य ॥ ४२
वेद विदित श्री हरी के, भये अगणित अवतार।
अवतारी श्री गौर को, जो नहीं जाने ख्वार ॥ ४३
लखन मोक्ष कूं तुच्छ कर, जाकी आनन्द कंद।
मायिक जन वा गौर कूं, मनुज कहत मतिमंद ॥ ४४
कहो गौर के दास बिन, को पायो श्रुतिसार।
हा हा धिक मैं क्यों भयो, निज जननी के भार ॥ ४५
गौर हरी के पारषदन, मे लख प्रेम अपार।
जान भये हरि पारषद, आपन माह असार ॥ ४६
अमिय लखन मृदु वचन सो; कर्कस हृदय पखान।
तार्किक सब प्रेमी भये, और गौर गत प्राण ॥ ४७
एकाकी वंचित रह्यो, मे ही मति को मंद।
गौर चरण चिन्तामणि, पाय गमाई अंध ॥ ४८
कहूँ विनय कर वचन में, सुनो सकल महाभाग।
सकल छोड़कर करो तुम, गौर चरण अनुराग ॥ ४९
बैरी इन्द्रिय चक्र में, फसो और कलिकाल।
भक्ति मार्ग कैसे मिले, तुम बिन गौर दयाल ॥ ५०
जनम गमायो वृथा जिन, नहिं देखे चैतन्य।
निज सुजनन को संग दे, गौर करो मोय धन्य ॥ ५१

कुमति कुकर्मी वासना, कलुषित कुत्सित चित्त।
करो दयामय गौर ने, सहज आपनो भृत्य ॥ ५२
मो हिय ऊषर भूमि में, भक्ति लता कस होय।
धीरज केवल गौर के, नाम गान सो होय ॥ ५३
मो हिय ऊषर भूमि में, साधन भये सब व्यर्थ।
बोए गौर ने प्रेम द्रुम, पल में कियो समर्थ ॥ ५४
भव जलधि में पड़ो हूँ, नक्र चहत मोय खान।
वधो वासना निगड़ सो, गौर बचाओ प्राण ॥ ५५
दुर्लभ मुक्ति बतावही, शिव सनकादिक व्यास।
गौर कृपामय देत सोइ, कर अपनो निज दास ॥ ५६
कहा निरंकुस कृपा वो, कहाँ वैभव की खान।
दीन बंधुता गौर सम, मे नहिं देखी आन ॥ ५७
सचराचर या जगत कूं, करत कृष्ण को दास।
निगम गूढ़ वो गौर हरि, पूजो मेरी आस ॥ ५८
शास्त्री जन जो कुछ कहे, मेरे जीवन प्राण।
गौर हरी के प्रेममय, सुन्दर नाना नाम ॥ ५९
सुर दुर्लभ वो प्रेम रस, चाखन चाहो नित्य।
योग यग्य तप छोड़ के, करो गौर पद कृत्य ॥ ६०
सहज चौर वा गौर की, गई न अबहू बान।
निष्ठा लज्जा धर्म अरु, हरो हमारो मान ॥ ६१
दानी प्रेमानन्द को, दिव्य कनक सम अंग।
वंदूँ कल्पक तरु सम, ताके में पद द्वंद ॥ ६२
धाम धाम में नाम को, तबही भयो प्रकाश।
वेद विदित गौराङ्ग को, जबहि भयो अवतार ॥ ६३
सिद्धी सिद्धन सो मिले, सुर तरु पूरे काम।
मन मेरो गौराङ्ग बिन, और करत नहिं ठाम ॥ ६४

गौर विमुख जन संग सो, भलो अग्नि को वास ।
गौर चरण की छटा बिन, पद न भलो श्रीं वास ॥ ६५
होउ ईस के दास वो, जो पुरुषारथ दास ।
गुप्त धाम के काम में, भयो गौर को दास ॥ ६६
गौर गुणार्व भक्त जन, जीवन आनन्द कन्द ।
होंगे प्राण प्रयाण कब, लेत नाम चैतन्य ॥ ६७
कपट छोड़ कब होउगो, कनक गौर को दास ।
कब होगो मो हृदय में, राधा भाव प्रकाश ॥ ६८
गौर धाम सुखधाम में, अविरल करतो नाम ।
करुणा कर मो हृदय में, करो सदा विश्राम ॥ ६९
जगन्नाथ मुख कमल लख, भये मधुप चख जासु ।
हेर हमारो हरो मन, शरण गहो मन तासु ॥ ७०
नयन न सींचत प्रेम पय, कण मुक्ता पय दाम ।
मेरी भव बाधा हरण, शरण हेममय धाम ॥ ७१
सखा देख संध्या भ्रमे, विद्युत चमकित चंद ।
लखऊगो उमगो हृदय, वारिध प्रेमानन्द ॥ ७२
अमृत स्पंदी एक रस, करत अंधतम नास ।
गौरचन्द्र नख चन्द्रिका, अद्भुत करत प्रकाश ॥ ७३
क्षणिक तप्त शीतल क्षणिक, क्षणिक पीन और क्षीन ।
गौर हरी कूं निरख तू, नाना भाव नवीन ॥ ७४
निज पर पात्रा पात्र को, हरि को नहीं विचार ।
देत नाम के गान सो, प्रेम भक्ति अतिसार ॥ ७५
तारे स्वपचाधम कुटिल, पापी दुर्व्यवहार ।
पावन पतित स्वनाम की, महिमा राख अपार ॥ ७६
तज यमुना वृन्दाविपिन, पीत वसन वनश्याम ।
अरुण वसन अम्बुधि पुलिन, लख्यो हेम सम धाम ॥७७

शिव विरंच इन्द्रादि सुर, विस्मय करत अपार ।
बिन साधन हरि भक्ति क्यों, गौर करत परचार ॥ ७८

तप्त कनक कमनीय तनु, अरुण वसन परिधान ।
नयनन सींचत प्रेम जल, कर मन ताको ध्यान ॥ ७९

जाकी आशा कर करो, कृष्ण नाम आधार ।
श्री चैतन्य कृपा बिन, सो न मिले श्रुति सार ॥ ८०

साहस सो क्यों करत है, जप तप साधन ध्यान ।
सुर दुर्लभ वो प्रेम हरि, करत अयाचित दान ॥ ८१

जप तप अर्चन सिद्धि सब, फीको योगाभ्यास ।
कहो गौर की कृपा बिन, काकूं प्रेम प्रकास ॥ ८२

तीर्थाटन षट शास्त्र के, रटनहुँ में श्रम जान ।
सुलभ प्रेमदात गौर के, चरण शरण मन आन ॥ ८३

जैसे जैसे गौर पद, पावे कर सद्भक्ति ।
ताकूं तैसे ही मिलै, राधा पद की भक्ति ॥ ८४

बिधि सुरेश सेवित सदा, चरण प्रेमरस खान ।
तप्त कनक सम गौर के, करो नाम को गान ॥ ८५

सत्य सत्य मैं कहत हूँ, विनय सुनो दे कान ।
छोड़ सकल गौराङ्ग को, भजो होय कल्याण ॥ ८६

भक्ति मुक्ति दुर्लभ नहीं, मैं जानी मन माह ।
गौर कृपा दुर्लभ लखी, बैकुंठहुं के माह ॥ ८७

प्रेम भक्ति से पूर्ण ह्वे, भजो चरण चैतन्य ।
आनन्द से या जगत कूं, करो गौरमय धन्य ॥ ८८

भजन प्रणाली प्रेममय, भक्ती और अनुराग ।
गौर दास के गुण प्रकट, क्षमा दया वैराग्य ॥ ८९

कीर्तन बिन कलि संतरण, कहा कौन विधि होय ।
प्रेमामृत या गौर बिन, दाता लखो न कोय ॥ ९०

जाकूं ताकूं जहाँ तहाँ, मिले ज्ञान वैराग्य।
गौर चरण की भक्ति जिन, लहीवोही सद्भाग्य॥ ९१

गावो तुम सब प्रेम से, नाम गौर के नित्य।
ब्रह्मेन्द्रादिक देव सब, करत जासु पद कृत्य॥ ९२

कबहुँ नहीं गौराङ्ग बिन, करे और की आस।
पाय चरण चिन्तामणि, पूरे सब की आस॥ ९३

अहंवाद अध्यात्म ने, वादन मोहो चित्त।
जो सुख सों भक्ति चहो, होउ गौर के भृत्य॥ ९४

कटि पट कुंडल श्रवण बिच, कंकण हिय हार।
गौर मल्लिका मुकुट धर, नाचत नाम उचार॥ ९५

मैं जानी गोपाल ही, भये कनकमय धाम।
लीला राधारमण की, और प्रचारण नाम॥ ९६

दास्य सख्य वात्सल्य और, कृत गोपिन को प्रेम।
दियो दयामय कृष्ण ने, धार रूप सम हेम॥ ९७

लख नाना मुनि मतन कूं, भ्रमित भयो संसार।
गौर चन्द्र लख सकल जग, प्रेमी भयो इकसार॥ ९८

पङ्गु न लंघे गिरि शिखर, बीज बिना नहिं अन्न।
इमि गौराङ्ग कृपा बिन, भक्ति न पावे अन्य॥ ९९

असुअन सींचत सरस हिय, स्वास लेत गंभीर।
हरो गौर ब्रज विरहणी, भावुक मेरी पीर॥ १००

श्री गोस्वामिकृष्णचरण (कृष्णकवि) विरचित
श्री चैतन्यचन्द्रामृतकणिका समाप्ता

श्री श्री गुरवे नमः

रासपंचाध्यायी भाषा

तस्मै श्री गुरु चरन नमौं जो ज्ञान अंजन नेत्र हि देयी ।
अज्ञान अंधतम प्रकाश हि परम परतत्व दरशायी ॥१
वंदौं श्री कृष्णचैतन्य-नित्यानंद द्वौ जगत कृपालु होई ।
गौड़ उदयाचल एक समै दोउचंद्र सूर्य जैसे उदिताई ॥
सकल जन हृदै अज्ञान तम त्रिविध ताप सब नासहि ।
परम मंगल सुखद भक्ति सद्‌य पुस्पाकर विस्तारहि ॥२
न अर्पित कहुँ स्वभक्ति उज्वल रस समर्पहेतु सो वपु धरि ।
कांचन कांति सुन्दर दीसित कलौ करुणा अवतीर्ण करि ॥
सो शचीनंदन हरि सिंह हूँ प्रवल हुंकार दर्प भरि ।
वसै सदा हृदि कंदरा तुमरे सो कल्मष द्विरद नाश करि ॥३

राधाकृष्णप्रणय इत्यादि—

कृष्ण प्रेम स्वरूपिनी राधा ल्हादिनी शक्ति इत एक आत्महि ।
पूर्व्व व्रजपुर दोउ देह भांति करि रास रस विलसहिं ।
सो दोउ अब एकत्व मिलि श्री चैतन्य नाम प्रकट होहि ।
राधा भाव कांति अंगि करि सोभा नौमि कृष्णस्वरूप सोहि ॥४

श्री राधायाः प्रणय इत्यादि—

श्री राधा प्रेम कि प्रवल महिमा कीदृश इह जानि ना पाई ।
ता में हमारो अतुल मधुरिमा सो राधा कीदृश आस्वादई ।
राधा सुख अनुभव कीदृश इत लोभि तद्‌भाव युक्त होई
शचीगर्भ सिंधु पूर्णचंद्र हरि ऊदीत भुवन प्रकासई ॥
अज्ञान मत्त जन दोष नाश हिं कृपा हुँ ते जो प्रमत्त करि
स्वप्रेम सुधा सम्पत्ति दाता श्रीकृष्ण चैतन्य प्रपद्य हमारि ॥६

श्री अद्वैत नित्यानंद अंग दोउ पार्षद भक्त बृंद संगहि ।
प्रेम नाम संकीर्त्तन प्रकाशि बंदौं जगत पावन दयालुहि ॥
बंदौं श्रीरूप सनातन भट्ट युग रघुनाथ श्री जीव गोसांई ।
जो उज्वल प्रेम रस विस्तारि साधन सिद्ध भाव दरशाई ॥
बृंदावन वासि वैष्णव पद करि दंडवत हुँ माथे धरि ।
दोष अदर्शि शील निर्मल हुँ इह जानि भरोसा चित्त भारि ॥
हम दीन अति हीन मंद मति ता में बुद्धि विद्या बल ही नाहि ।
रास पंचाध्यायि भाषा पद करि गाइवे कि लोभ मन माँहि ॥
श्री व्यास नंदन पद नमामिहुँ इह भाषा पद गीत जो गाई हैं ।
इत दोष दृष्टि होत नाहि जो पूर्व्व शास्त्र प्रसंग मन लाई हैं ।
कृष्ण रास रस पद गीत गाई चिरोंद्रिय मन हर्षहु पाई हैं ।
पान करि हृदि तृप्त ना मानि फेरि तृष्णा श्रवन उपजाइ हैं ॥

श्रीभागवते-विक्रीडितं व्रजवधूभिरित्यादि—

व्रजवधू सह रासलीला किन्ह जो नंदनंदन हि ।
श्रद्धायुक्त होइ सुनत जोइ अथवा इह कोइ वर्णंतहि ॥
श्रीकृष्ण की यह श्रेष्ठ भक्ति निश्चय ताकौ मीलहिं ।
हृदि काम रोगहि नास जात है सर्व ज्ञाता तत्व कि होहि ॥

निगमकल्पतरु इत्यादि—

बेद कल्पतरु सहस्र शाखा ता में एक फल श्रीभागवत हि ।
सुक मुख तें जब सखलथ होई अमृत निंद पराभृत सोहि ॥
रसआलय रस कि पूरह समूह रस कि स्वरूप हि ।
हे रसिका द्रवी भावुका सब पान करो वारम्बार हि ॥
श्रीभागवत द्वादश स्कंधहु द्वादश अंग मानि कृष्ण रूपहिं ।
ता में पंचाध्यायी पाठ आत्म हुँ जाकि महिमा वरनि न जाहिं ॥
श्लोक संख्या इह अंकित किंनि पद गीत संख्या तामें दिनि नाहि ।
पंचाध्यायि भाषा पद जो गाइ क्रम करि और लिखहु ताहि ॥

इति गुर्व्वादि स्तुति पद बंदनम् ॥

अथ ग्रन्थारम्भः

भगवानपि ता रात्री इत्यादि—

भगवान श्री नंदनंदन हरि इह योगमायाश्रय करि।
इत लीला प्रेम हि रूप माधुरि सो मधुर वेनु कर धरि।
ता राति शरद कि फूलि फूलन समीर सुगंध वहे लहरि।
सरस ऋतु देखि अनुस्मृत सो रास अभिलाष मन करि ॥१

तदोडुराज इत्यादि—

ता समै चंद्र अरुण किरन पूरव दीशतें झलकारी।
जैसे प्यारी प्रिया चिर दर्शन सुखद प्रानि दुःख जात हरि ॥२

दृष्ट्वा कुमुद्वन्त इत्यादि—

पूर्ण चंद्र रमा मुख आभा नव कुंकुमारुण रंजित करि।
देख वन याहि भांति गीत गाइ व्रज जुवतिन को मन हरि ॥३

निशम्य गीतं इत्यादि—

सुनत गीत ताई जागि अनंग कृष्ण रूप मनहि में लाई।
कुंडल लोल वेग चलन-तेसो जहाँ कांत अलच्च चलि आई ॥४

दुहन्त्योऽपि ययु इत्यादि—

कोइ गोपी दूहत दोहनी पटकाई। कोइ गोपी चुले पै पय औटाई ॥
कोइ गोपी संजात्र रशोई रसाई। ताहि सब छोड़ एहु चलि आई ॥

परिवेशयन्त्य इत्यादि—

कोइ गोपी परिवेशन हु विसराई। कोइ गोपी बालकहुँ न दूध पिआई ॥
कोइ गोपी पति सेवन ते भूलि आई। कोइ गोपी भोजन तजि उठि धाई॥
कोइ गोपी मांजत अंग उबटाई। कोइ गोपी अंजन एक नैन अंजाई ॥
कोइ व्यतस्ताम्बर आभरन आई। नक बेसर एक कान सोहाई ॥
कोइ गोपी कटि कीकंणि हार पहिर आई। एहु सब कृष्णनिकट मिली जाई

ता वार्य्यमाणा इत्यादि—

पति पित्रि भाइ वंधु समझाये। बरनि राखे कोइ वरजि ना पाये ॥

ऐसे गोविंद चित्त मोहि ताहि । सुध बुद्धि तन हि कि मन हर लाहि॥७

अन्तर्गृहगता इत्यादि—

कोइ कोइ गोपी जान न पाई । सुनत ही गीत चित्त बिकलाई ॥
अन्तः पुर गत गमन रहि ताहि । कृष्ण भावना करि दृष्टि लगाहि॥८

दुःसहप्रेष्ठविरह इत्यादि—

कृष्ण विरहज ताप सहन न पाई । ता में अशुभ अमंगल हि कटाई ॥
कृष्ण ध्यान तें जब आलिंगन पाई । ता में शुभ मंगल सब कटि जाई ॥९

तमेव परमात्मानं इत्यादि—

छंद—सोहि परमात्मा जार बुद्धि करि जैसे परमागति पाइहिं ।
गुणमयि देह जब छोड़ दीनि तबहि गुणवंध छोडाइहि ॥१०

कृष्णं विदुः परं कान्तमित्यादि—

कृष्ण को जानि कांत पर पति ब्रह्म ऐसे ज्ञान मनहु न लाई ।
गुण बुद्धि ते गुण देहापभाव कहो सुकदेवजि कैसे छोड़ाई ॥११

उक्तं पुरस्तात् इत्यादि—

पूर्व प्रसंग सुन हो परचीत इह वरनी· जो तुमहि सुनाई ।
शिशुपाल द्वेषि सिद्ध गति पाइ प्रिय भावते क्या संदेह मन लाई ॥

नृणां निःश्रेय इत्यादि—

इह नृलोक कि हित कारन कृष्ण आपनि प्रकट देखाई ।
सो अविनासो अपरिमान हु निर्गुण सगुण किनि नियन्ताई ॥१३

कामं क्रोधमित्यादि—

काम क्रोध भय प्रेम सम्बंधहि सुहृदता इह जगताहि ।
इतने जो नित्य हरिते राखे सो हरि ताको निज गति देहि ॥१४

न चैवं विस्मय इत्यादि—

सो भगवत्य अजनि मानुख ताकि कारज संदेह मत लाई ।
जो हि योगेस्वरेश्वर कृष्ण है सब को जो मुक्त पद दाई ॥१५

ता दृष्ट्वान्तिकमायाता इत्यादि—

देखे भगवान् ब्रजसुन्दरीगन ऐसे निकट चलि आये ।
बोलन लागे मधुर बोलन प्रिय बचन हीतें मोहाये ॥१६

स्वागतं वो महाभागेत्यादि—

आपनि आयि हो सुन्दरीगन हमते क्या प्रीत बनि आई ।
ब्रज कि कुशल आगमन कारन कहोरि सब मोय सुनाई ॥१७

रजन्येषा घोररूपा इत्यादि—

यह निसा अति घोर रूपा निसाचर डर जानिहि ताई ।
इह बन स्त्रिया रहे न कोई फिरि जाओ तुमहि ब्रज मांई ॥१८

मातरः पितर इत्यादि—

मात पित सुत भ्रात निज पति ढूढ फिरत बिकलाई ।
तुम्हें न देखि वे दुःख पाये देओ सुख तुम उनहिं को जाई ॥१९

दृष्टं वनमित्यादि—

देखे बन वन फूलहि फूलन चन्द्र किरन उजरे रये ।
पर्श जमुनानिल मन्द वहै कंप तरु शाखा सोभा अति शये ॥२०

तद्यात माचिरं इत्यादि—

बेगि जाओ सब अपने घर को पति सेब हो सति मन लाये ।
रोदित सब वत्स बालक दोहायो पियायो उनहि को जाये ॥२१

अथवा मदभि इत्यादि—

तुम हि जो हमारे प्रीतहि कारन होय हो आसक्त चित्ताशय ।
आये निकट युक्त इह मानि ऐसे सब जन प्रीत करे हय ॥२२

भर्त्तुः शुश्रुषणं स्त्रीणामित्यादि—

पति सेबन पर धर्म त्रिया की । कपट रहित मन होई जाकी ॥
पति बंधु सेबन युक्त होय । यह प्रजानुपालन गुन सोय ॥
कठिन स्वभाव कुप्रिय दीना । ब्रृद्ध जड़ रोगि होइ धन हीना ॥
ऐसे पति त्रिया छोड़े नाहि । कहैं अपातकि सब जग ताहि ॥२३

अस्वर्ग्यमवयश्यमित्यादि—

लोक में निंदित जानी ताई। जोंहि स्त्रिया कुल उप पति गाई॥
अपरलोक अपयश सोयाहि। दुःखहु भयावह होत है ताहि॥

श्रवणाद्दर्शनादित्यादि—

श्रवण दर्शन ध्यानपरा होय। मेरि कीर्त्तन प्रेम उपजोय॥
निकट मेरि ऐसे प्रेम न होय। फेरि जाओ तुम सब गृह कोय॥
अप्रिय भाष गोविंद सुनाये। इत ब्रजनारि सकल अकुलाये॥
आशाभंग हि त्रिसर्ण चित्त माँहि। डूबि गयीं चिंता सागर थाहि॥

कृत्वा मुखान्यवशुचः इत्यादि—

कृष्ण आगे ठाडी ब्रजनारी। ऐसे परि गहीर दुःख भारी॥
अध मुख कीनि स्वास निस्वासा। बिंब अधर ही सूखत त्रासा॥
पद अंगुलि ते भूस लिख तायि। अश्रु बारि कुच कुंकुम धोइ जायि॥

प्रेष्ठं प्रियेतरमित्यादि—

प्रिय अप्रिय इतर भाषमाना। कृष्णार्थ निवर्त्ति गई सब कामा॥
नेत्र विमृज्य हि रोदित बिखरि। रुद्ध गीर कंठ कूप करि थोरि॥

मैवं बिभोरित्यादि—

कृष्ण जो बोले कठोर ऐसि बानी इह अति अयोग्य तिहारि।
तजि विषय तुव पद मूल भक्तया भजे हु सब कुलनारी॥
हम हुँ भजते भजति सुन्दर इह परम्परा विध मानि।
उत आदि देव नारायन जैसे भजे हु मुमुक्षु जन जानि॥२८

यत्पत्यपत्य इत्यादि—

पति सेवन पर धर्म हि स्त्रिया कि इह जो तुम उपदेस कारी।
यह उपदेस तुमहिं ते वर्त्तैं प्रिय आत्म बंधु सकल तनु धारी॥२९

कुर्वन्ति हि त्वयि रतिमित्यादि—

तुम तें रति करै पंडित जन इह नित्य आत्म प्रिय भाव करि।
पति सुतादिक सदा दुःखदायि शास्त्रविद इह कहानी बिचारि॥

तुमहिं प्रसन्न हो बरदेस्वर हे पद्मनेत्र तुम नाथ हमरि ।
वहुदिन आशाधारि हम जन कि आशा भंग अवहु मत करि ॥३०

चित्तं सुखेन इत्यादि–

तुमहिं हमारे चित्तहु हरिलाथे सुखते गृह प्रवेश रहिरी ।
पद ना चलत तुम पद मूल तें कहो ब्रजहि जाइ काहा करी ॥३१

सिञ्चाङ्ग नस्त्वदधरेत्यादि–

निज अधरामृत करहु सेचन हाँसीत्तन गीत कामाग्नि जरि ।
नहि विरहजाग्नि देहा करि दाहा ध्यान ते जात निकट तुमरि ॥३२

जर्ह्यम्बुजाक्ष इत्यादि–

हे पद्मनेत्र तव पद तल लक्ष्मी दत्ताक्षन अरन्यजन प्रियाहि ।
सुन्दर सो पद प्रवृत रमित हुऊ समीप ठाढ़े शकति नाहि ॥३३

श्रीर्यत्पदाम्बुजरज इत्यादि–

जो पद रज लक्ष्मी करि आसा । सौतायि करि चाहे संग तुलस्या ॥
बक्षसि पदवी जानि इह तायि । जो पद दास सेबत नित्य तायि ॥
जा सोभा देखि ब्रह्मादि तप लेहि । सोहि पद रज हमहु को देहि ॥३४

तन्नः प्रसीद इत्यादि–

प्रसन्न होहु दुःखनाशन हारो । अब पाइयो पद मूल तुमारो ॥
जा कि आश ते वसति त्यज देइ । करि उपासना तन मन लेइ ॥
सुन्दर हास हि निरखि तुमार । काम तापतें तपति सब नारी ॥
हे पुरुष रतन तुम हित कारि । अब देइ दासि पद हुं तुमारि ॥३५

वीक्ष्यालकावृतमुखमित्यादि–

अलकावृत मुख कुंडल सोभा । गंडस्थलाधर सुधा हास लोभा ॥
अभय दत्त भुजदंड तिहारि । रति जनक वक्षः सोभा नेहारि ॥
इह देखि हास सब कुल नारि । आइ दासी भई हां तुमारि ॥३६

कास्त्र्यग ते इत्यादि–

कल पदामृत गीत मन मोहि । इह त्रिया पति धर्म न छोड़े काहि ॥

त्रिलोक की शोभा तव रूप हेरी । गो पक्षि मृग द्रुम पुलक घनेरी ॥

व्यक्तं भवान् इत्यादि—

ब्रज दुःख नाशन व्यक्त तुमारि । आदिदेव जैसे सुरलोक रखारि ॥

तुम आत्मवंधु किंकरी जन कि । कर पद्म धर सिर तापिस्तनकि ॥

इति विक्लवितमित्यादि (छन्द)

एतहि विलपि सब गोप सुन्दरी सुनि जोगेस्वर हरि ।

हास बदन ते सो गोपीन सह आत्मराम हो रमन करि ॥३९

ताभिः समेताभिरित्यादि—

ता गोपीयन सह सुन्दरचेष्टित कृष्णोत्चित फुल्ल बदन होइ ।

सुन्दर हास दशन कुन्द सोभा तारा माझ चन्द्र विराज सोइ ॥४०

उपगीयमान इत्यादि—

सुन्दर गीत मधुर सुरतें शत यूथ वनिता सह गाइ ।

वैजन्ती माला सोभमाना विहरत बन सोभा होत ताइ ॥४१

नद्याः पुलिनमित्यादि—

गोपीयन सह पुलिन बन आये जहाँ सुन्दर हिमबालुहि ।

जमुना कर तरंग सेवित कुमुदामोद बायु वहतहि ॥४२

वाहुप्रसारेत्यादि—

बाहु पसार करि आलिंगन कर उरू परस्परा होइ ।

निवी स्तन पर्श नर्म्म रहस्य ते नखाग्रपात करत सोहि ॥

क्रीड़ावलोकन हास मुसकानि ब्रजसुन्दरी गन हसावतहि ।

रति पति काम करि उद्दीपन ता सुन्दरी सह रमतहि ॥४३

एवं भगवत कृष्ण इत्यादि—

सो भगबत कृष्ण महात्मन गोपसुन्दरी लब्धमान होई ।

इह जगत स्त्रीयन मध्य अपने अधिक करि मानतोई ॥४४

तासां तदित्यादि—

ता सब की सौभगमद मान गर्व्व कृष्ण निज दृष्टि हु टरि ।

सो मदनाशन प्रसन्नमान कि अलच हु अंतद्धयान करि ॥४५

इति रासे प्रथमोऽध्यायः ।

अन्तर्हिते इत्यादि—

कृष्ण अचांचक अन्तर्ध्यान जातहि कोइ काहु लखन न पाइ ।
ताकि अदर्शन वितापि गोपिन जैसे करिणी कर छोड जाइ ॥१

गत्यानुराग इत्यादि—

गति अनुराग हास ईक्षन मनोरमा आलाप विहारहि ।
आक्षिप्तचित्ता गोपवधू सब कृष्ण चेष्टा करि तदात्मिकहि ॥२

गतिस्मित इत्यादि—

गमन हासीक्षण बोलन प्रिय प्रिया प्रति मूर्त्त आरोढ़ाइ ।
कृष्ण अहं इति निवेदि विहार बिलास कर तदात्मिकाइ ॥३

गायन्त्य उच्चैरित्यादि—द्वीपदि

मिल गोपवधू कृष्ण गुन गाइ । मृत्तकसि फिरे सकल बन माहि ॥
आकाश एसो गुन पुरुष जानि ताहि । सब वृक्षलता बन पूछत जाहि ॥

दृष्टो वः इत्यादि—

हे अस्वत्थ प्लक्ष नग्रध तुमहि । नन्द नन्दन की कहुँ दृष्टि परहि ॥
प्रेम हास अवलोकन ते सोहि । हम सब कि मन हरि ले जोहि ॥५

कश्चित्तुलसि इत्यादि—

हे तुलसि मंगल रूप तुमारि । गोविंद चरन कि परम प्यारि ॥
तुम सह अलिकुल सोभनहारो । कँहि देखे कृष्णहु प्यारो तुयारो ॥६

कच्चित् कुरुवक इत्यादि—

हे कुरुवकाशोक नाग पुन्नागा । हे चंपका कृष्ण कहुँ दृष्टि लागा ॥
रामानुज कृष्ण हम मानिन हि । गयो सुहासते दर्प हरि लहि ॥७

चूतप्रियाल इत्यादि— छन्द

हे चूत प्रियाल पनसा हे सन कोविदार महानुरूपा ।
हे जम्बर्क हे बिल्व हे वकुलाम्र कदम्ब-नीपा ॥
जमुना कुल जन्म तेहारो तीर्थवासि पर उपकारी ।
कृष्ण पदवी कहि सुनायो आत्मरहिता हम सब नारी ॥८

मालत्यदर्शि वः इत्यादि —

हे मालति जाति जुति मल्लिकाई । कृष्ण तुम सब निकट दर्शाई ॥
कर पर्शि कृष्ण निज सुख पाई । गवो तुम सब की प्रीति बढ़ाई ॥८

किं ते कृतं क्षिति इत्यादि—

हे क्षिति तुम क्या तप किनी कृष्ण पद पर्शिहर्ष रोम पुलकाइ ।
क्या त्रिविक्रम पद मिलन तें क्या बराह बपु आलिंगन पाइ ॥१

अप्येणपत्न्युपगत इत्यादि—

हे सखि हरिनी कृष्ण प्रियासह इते गयो तुमहि सुख देइ ।
प्रियांग संग कुच कुंकुम रंजित कुंदमालहि गंध बायु लेइ ॥११

बाहुं प्रियांस इत्यादि-

बाहु प्रियास्कंध लीला पद्मकर तुलसिका अलिकुल धायि ।
हे तरु तुव प्रनाम्र कृष्ण क्या अवधानैं प्रनयावलोकनायि ॥१२

पृच्छतेमालता इत्यादि—

देख पूछत लता वनस्पति आलिंगन करि इत सोभा पाइ ।
साचो मानि कृष्णकर पर्शि ऐसे उत्फुल्ल पुलक भाव लाइ ॥१३

इत्युन्मत्तवचो इत्यादि—

ऐसे उन्मत्त बोलि सब गोपिन कृष्ण अन्वेसन कातर होइ ।
कृष्ण लीला करि परस्पर कृष्णानुरूप हो तदात्मिका जोइ ॥१४

कस्याश्चित् पूतनायन्त्याः इत्यादि—

कोइ गोपी पूतना बनि आई । कृष्ण बालकसि स्तनहु पियाई ॥
कोइ गोपी बालक हूँ जैसे रोई । पदघात तें शकट पटकाई ॥१५

दैत्यायित्वा जहारा इत्यादि—

कोइ गोपी तृनावर्त्त बनि आई । ऐसे बालक कृष्ण हरि ले जाई ॥
कोइ जैसे बालक जानु गत धाई । चलतहि पग नूपुर बजई ॥१६

कृष्ण रामायिते इत्यादि-

कोइ कोइ कृष्ण राम रूप होई । कोइ कोइ गोप ही रूप दिखाई ॥

कोइ कोइ बक वत्स बनि आई । कोइ कृष्णानुरूप हो बधि ताई ॥१७

आहूय इत्यादि—

कोइ कृष्णानुक्रम बेन बजाई । दूर बन तें सब धेनु बोलाई ॥

ऐसे सुन्दर बेनु तान सुनाई । कोइ साधु साधु बखानत ताई ॥१८

कस्यांचित् स्वभुजं इत्यादि—

कोइ गोपी निज भुजा उठाई । कोइ स्कंध धरि यह कह ताई ॥

कृष्ण अहं हि ललित गमनाई । यह देख मेरि होत मन्हाई ॥१९

मा भैष्ट वात इत्यादि—

इह मेहा बर्षे डर मति कोई । ताकि त्रान मंगलहु विध जोई ॥

एक अंबर धरि हात उठाई । यथा कहि गोवर्द्धन लीला देखाई ॥२०

आरुह्यैका इत्यादि—

कोइ पदक्रम करि आरुढ़ाहि । कालिमाथे ऐसे नृत्य कर ताहि ॥

हे दुष्ट तुम जाओ ह्यां तें न्यारि । सब खलन कि हमहुँ दंडधारि ॥२१

तत्रैक वाच इत्यादि—

तहाँ एक गोपी कहति सुनाई । हे कृष्ण देख दावानल दहताई ॥

कृष्ण बोले रहो सब नेत्र छिपोई । इतहि तुम मंगल विध होई ॥२२

बद्धान्यया स्रजा इत्यादि—

कोइ यशोदा रूपहु बनि आई । कृष्णसि बालक पाकर कर लाई ।

स्रज बांधि उलूखल लाई । भांड फोरि माखन कि चोराई ॥

जो हि सुन्दर नैन छिपाय । रहत हि ऐसे मन डर पाय ॥२३

एवं कृष्णं पृच्छमाना इत्यादि—छन्द

ब्रजसुन्दरी ढुढ़ फेरत वृक्षलता बन कृष्ण पूछन हारि ।

कृष्ण पद चिन्ह भूमांकित ताहि सकल गोपीन दृष्टि नेहारि ॥२४

पदानि व्यक्तमित्यादि—

व्यक्त जानि इत पद चिन्हहि माहात्मन नंद नंदन हरि ।

देखत ताहि ध्वज पद्म वज्रांकुश जवादि रेखा सब न्यारि ॥२५

तैस्तैः पदैरित्यादि—

ताहि पद चिन्ह जानि लखत हि कृष्णमारग ढूढ़न हारि।
एक वधू पद चिन्ह मिलित देख दुःख मानि कहि फुकारि ॥२६

कस्याः पदानि इत्यादि—

किनकि पद चिन्ह इतहि देखो कृष्ण संग मिल गई ताथि।
सुन्दर भुजहि स्कंध आरोपि जैसे करिन्य कर मिल जाई ॥२७

अनया राधितो इत्यादि—

सो वधू-आराधित निश्चित इह भगवान योगेश्वर हरि।
या कि प्रीति ते हम त्यजि गोबिंद निर्जन लाये विहार करि ॥२८

धन्या अहो इत्यादि—

धन्य हे सखी गोबिंद पद रज याकि महिमा भारी।
जो रज ब्रह्मा शम्भू रमादेवी पवित्र होय मस्तक धारि। २९

तस्या अमूनि इत्यादि—

सो वधू पद चिन्ह हु देखत इत में क्षोभ मन होत हमरि।
कृष्ण अधरामृत गोपीयन धन एकलि लाई संभोग करि ॥३०

न लक्षयन्ते इत्यादि —

ताकि पद चिन्ह तहाँ नहिं देखि तृणांकुर वन शोच बिचारि।
कोमल पद तल क्षत भय मानि प्यारो प्यारि लिन स्कंध परि ॥३१

इमान्यधिकमग्नानि इत्यादि—

देख अधिक मग्न पदांकित इह हेतु एक मानि ब्रजनारी।
वहत वधू भाराक्रांत कृष्ण ईह कामुक अनुमान बिचारी ॥३२

अत्रावरोपिता कान्ता इत्यादि—

सो महात्मन पुष्पहि कारन आव प्यारि को इतहि उतारि।
कुसुम तोड़ि पदाक्रम करि असकल पद चिन्ह नेहारि ॥३३

केशप्रसाधनं इत्यादि—

कामिन्या कामिन वेश बनाई आवहि केश संस्कार करी।

सो पुष्प चूड़ा बाँधि सुन्दर इत बैठे संग लिये प्यारी ॥३४

रेमे तया इत्यादि-

आत्माराम स्वात्मरत होई सो प्यारी सह अखंड रमे ताई ।

इत कामियन कि दैन्य इत रता स्त्रीया दुरात्मता दरशाई ॥३५

इत्येवं दर्शयन्त्य इत्यादि—द्वीपाद

व्रजनारि फिरति बन भटकै । खोर निकट बन ताहि को देखै ॥

जाको कृष्ण निर्जन हु बन लाये । जाको लागि सोहि सब त्यजि आये॥

सा च मेने इत्यादि—

सो गोपी निज मनहि अभिमानि । सब स्त्रीया में आपनि श्रेष्ठ जानि॥

सब अनुरागि गोपीन त्यजि देई । कृष्ण भजै मोहि प्रीति लगाई ॥३७

ततो गत्वा इत्यादि—

देखि बन देशहु कृष्ण तें बोली । चलहुँ न पाँउ सुन बन डोलो ॥

जहाँ आवहि तियारो मन भाओ ये । तहाँ तुम लेई चल अब मोये॥

एवमुक्त इत्यादि—

कृष्ण बोले प्यारि तुम आओ । निज स्कंधोपर तुम आरोढायों ॥

क्रमते करत स्कंध आरोढ़ोई । ताहि कृष्ण अन्तरध्यानहु होई ॥

सो वधू ताप विरह दुःख पाही । ऐसे फेरति एकेलि बन माही ॥३९

हा नाथ रमण इत्यादि—

हा नाथ रमन प्यारो तुम मेरि । कहाँ गये हो एकेलि बन फेरि ॥

हम निज दासी जानि वेहारि । दर्शन देओ निकट विहारि ॥४०

अन्विच्छन्त्यो इत्यादि—

ढूढ़त सब गोपी ताहिको देखे । बिरह दुःख तें रहि विमोहेके ॥४१

तया कथित इत्यादि—

सो गोविंद तें मानहु जैसे पाई । ता सबहि को कहिकै सुनाई ॥

फिर आपनि अवमानि जो होई । सुनि ता सब विस्मय चित्तलाई॥४२

ततोऽविशन् वनं इत्यादि—

ताहि संग ले ढूढ़त सब नारि। जब ते रहि चंद्र कि उजियारि।
तहाँ एक अंधियारि ऐसे घेरि। निवर्त्ति रहे सकल गोप नारी ॥४३

तन्मनस्का इत्यादि—

कृष्ण मनोलाप कृष्ण गुन गाईं। सब निज देह गेह बिसराईं ॥४४

पुनः पुलिनमागत्येत्यादि—

सब फिरहि पुलिन बन आये। कृष्ण आगमन कि वासना मन लाये॥
मिल बैठे सकल एक ताईं। कृष्ण महिमा गुन मधुर करि गाईं ॥४५

इति रासे द्वितीयोऽध्यायः

—

अथ गोपीगीत—

जयति तेऽधिकं इत्यादि—छन्द

जब ते तियारि जन्म इह ब्रज जयति मंगल अधिकाईं।
लक्ष्मी लंकृत बसत निरन्तर घर घर होत आनन्द बधाईं॥
हे कृष्ण तुम निज दृष्टि ते देखो तियारि जन तुम लागि।
धरत प्रान फिरत बन बन होइ तुम्हार अनुरागि ॥१

शरदुदाशयेत्यादि—

हे सुरतनाथ नैन तुमारि शरद कमल दल सोभा हरि।
ताहि अमूल्दासिका हनत ईंचित तें को हानहि वध करि ॥ २

विषजलाप्ययात् इत्यादि—

विष जलाप्यय व्याल राक्षस वर्षा मारुत दावाग्नि वारि।
वृषासुर मारि विस्व भयतें ब्रज जन कि करि रक्षारि ॥३

न खलु गोपिका इत्यादि—

हे सखे तुम जशोदा नन्दन नहिं देहिनात्मरात्मा दृष्टिकारि।
क्या ब्रह्मा अर्थित विश्वरक्षित तुमहि यदुकुल प्रकट कारि ॥४

विरचिताभयं इत्यादि–

निज भक्त जन तुम अभय दत्ता तुमहि श्रीकर ग्रहन करि।
हे कांत कामद कर-सररुह अब देहि हमहुँ सिरोपरि ॥५

व्रजजनार्त्तिहन् इत्यादि—

हे वीर व्रजजन दुःख नाशन योषित जन गर्व्व हारि।
दर्शन दे कमल मुख सुन्दर हे सखे हम दासि तियारि ॥६

प्रणतदेहिनामित्यादि—

प्रणत जन कि दुःखहु नाशन धेनु अनुयात पदांबुज तियारि।
श्री निकेतन फणि-फणापित धरो कुच पै हर ताप हमारि ॥७

मधुरया गिरा इत्यादि–

हे पद्मलोचन मधुर गिरा सुन्दर वचन अति मनहारि।
अमूल दासिका मोहित जीवन पियायो अधर सुधाहु तियारि।८

तव कथामृतं इत्यादि —

तव कथामृत तापिजन जीवन कविहि वंदित दुःख नाशन होहि।
सुनत मंगल श्रीमत् विस्तारि जगत पै श्रेष्ठ दाता जन सोहि ॥९

प्रहसितं इत्यादि–

सुन्दर हाँसि प्रेमेचरण विहार हि तव ध्यान मंगलहु हमारि।
निर्जन संकेत जो हृदै स्पृहा चोभि मन जानि कुहक तियारि ॥१०

चलसि यद्व्रजादीत्यादि–

गौचरायन जायो व्रज तें हे नाथ ललित पदहु तियारि।
सिलतृणांकुर दुःखद जानि हमहु मन दुःख होत भारि ॥११

दिनपरिक्षये इत्यादि–द्वीपदि

दिन अवसान फेरि जब आयो। सब गोधन हि संग करि लायो।
कुन्तलावृत कमल मुख सोभा। गोरज पराग जैसे अलि लोभा ॥
सुन्दर रूप सोभा दरशायि। हेरि स्मर वश सब मन मायि ॥१२

प्रणतकामदमित्यादि–

हे रमन चरन कमल तियारि । प्रणत जन आशा पूरन कारी ॥
जाको ब्रह्मा पूजत नित्यताई । वेद बखानत अन्त न पाई ॥
धर भूषन धै विपदा नाशि । सेवित जन वहु सुखहुँ ददासि ॥
हे दुख नाशन चरन तियारो । सो अब अर्प हो स्तनहुँ हमारो ॥१३

सुरतवर्द्धनं इत्यादि–

हे वीर ! तुम अधरामृतरासि । अब वितरहु हमहु पिवासि ॥
सुरत वर्द्धि चुम्बित वेनु संशि । इतर राग नृलोक दुःख नाशि ॥१४

अटति इत्यादि–

तुम जाओ वन दिन प्रति जानि । क्षण नहिं देखि युग करि मानि ॥
कुटिल कुन्तलावृत मुख सोभा । दर्शिदश-निमिष कृत जड खोभा ॥१५

पतिसुता इत्यादि–

पति सुत बंधु भय्या सब छोड़ि । अब आयि हम निकट तव जोरि ।
तुम गीततें मोहिता सबनारी । तुमहिं अब गतिविद हमारी ॥
हे कितव निजयोषित निशि आइ । तुम विनु को पुरुष त्यजि ताइ॥१६

रहसि संविदं इत्यादि–

प्रेम ईक्षण सुन्दर मुख हँसि । उर वर सोभा धाम यों दर्शि ॥
निर्जन संकेत कामोदय तियारि । रति स्पृहा हो मन मोहे हमारि ॥१७

व्रजवनौकसां इत्यादि–

हे विश्वमंगल व्यक्त तियारो । व्रज जन कि दुःख नाशन हारो ॥
हम क्षण मति त्यज हे प्रियात्मन् । तुम स्वजन हृदय रुजनाशन ॥१८

यत्ते सुजात इत्यादि–

हे कृष्ण कोमल पदाब्ज तियारो । कुच युग होत कठिन हमारो ॥
धारहुँ एतहि भय मन मानि । चरत वन दुख होत अनुमानि ॥
कृष्ण तुमहुँ प्रान हम सब के । ता में बुद्धि मोह होतहि मन के ॥१९

इति रासे तृतीयोऽध्याय:

इति गोप्यः प्रगायन्त्य इत्यादि–छन्द

गाय प्रलपि सुन हो राजन् ऐसे हि सकल गोप नारी ।
ऊँचि सुर मिलाइ रोइ कृष्ण दर्शन लालसा मन भारी ॥१

तासामाविरभूच्छौरि इत्यादि–

ता गोपीयन माझ आये सुन्दर पद्ममुख हास मान करि ।
पीताम्बर धर माला सोभित साक्षात मन्मथ दर्प हरि ॥२

तं विलोक्यागतमित्यादि—

कृष्ण आगमन देखि गोपिन प्रेम उतफुल्लित लोचना ।
उठि ठाड़े सकल एक वेरि निज देह आई ऐसे प्राना ॥३

काचित् कराम्बुजमित्यादि–काचिदञ्जलिना इत्यादि–

कोई गोपी कृष्ण कराम्बुज कर अंजलि हर्षतें पकरि ।
कोई गोपी कृष्ण वाहु चंदन भूषित निज स्कंधोपरि धरि ।
कोई गोपी कृष्णचर्व्वित ताम्बूल लेतहि निज अंजलि करि ।
कोई गोपी कृष्ण पद कमल हि धरहि तापित स्तनोपरि ॥४

एका भ्रुकुटि इत्यादि—

एक गोपी भ्रुकुटि चढ़ाइ विह्वल मन प्रेम कूँप भरि ।
हानत नेत्र कटाक्ष चलाइ निज ओष्ठ दशनतें छद करि ॥६

अपराऽनिमिषत् इत्यादि—

कोई गोपी निमिष दृगते सेवति कृष्ण मुखाम्बुज माधुरि ।
पिवति चित्त तृप्त ना मानि संतन जैसे कृष्ण सेवन करि ॥७

तं काचिन्नेत्ररन्ध्रेण इत्यादि—

कोई नेत्र द्वार कृष्ण हृदि लाइ दृष्टि लगाई रहि ताई ।
जैसे योगिन भाव गोपित पुलकानंद नित्य मग्न होई ॥८

सर्व्वास्ताः केशवालोक इत्यादि–

सकल गोपिन कृष्ण अवलोकि परमोत्सव आनन्दताई ।
विरहज ताप निवर्त्ति जैसे संस्मृत जना परं ज्ञानहि पाई ॥९

ताभिर्विधूतशोकाभिरित्यादि—

सोक रहित ता गोपियन सह युक्त होय श्रीभगवान हरि।
सोभा अधिक प्रकाशि राजन् ऐसे पुरुष शक्तया लस्व करि ॥१०

ताः समादाय कालिन्द्या इत्यादि—

ता गोपियन ले प्रवेश किन कालिंदी पुलिन वन माँहि।
विकसित कुन्द मंदार सौरभ अनिल अलि गुंजत ताहि ॥११

शरच्चन्द्रांशु इत्यादि—

शरद चन्द्रमा किरन उजियारि ससूह तमो दोषहि हरि।
जमुना निज हस्त तरंग तें कोमल बालु अंचित करि ॥१२

तद्दर्शनाल्हाद इत्यादि—द्वीपदि

कृष्ण दर्शनानन्द तें व्रज नारी। सब हृदि रुजहि नाशन हारी॥
श्रुति जैसे ज्ञान मनोरथ पाई। कर्म्मांग कि सब मैल कटाई॥
कुंकुमाक्त निज उत्तरिना। कृष्णलागि सो आसन करि दिना॥१३

तत्रोपविष्ट इत्यादि—

तापै बैठे श्रीकृष्ण मुरारी। योगेस्वरांतः हृदि आसन पधारी॥
सब गोपिन सभाजित शोभा। एक पद धरे त्रिलोक कि सोभा॥१४

सभाजयित्वा इत्यादि—

सभा सन्मानि सो अनंग विथारि। भ्रु विलास हासीक्षण मनोहारी॥
कृष्णांग पद निज करहि पर्शि। जैसे अस्तुत ईषत कुभाषि॥१५

भजतोऽनुभजन्त्येक इत्यादि—

एक पुरुष भजानुरूप भजैं ताई। दोऊ अभजत उत प्रीत लाई।
एक पुरुष भजेहु ना भजै कोई। कहो कृष्ण विस्तारहि कहा होई॥१६

मिथो भजन्ति इत्यादि—

भजानुरूप भजै पुरुष जोहि। स्वार्थ उद्दम कारि जानि सोहि॥
ता में धर्म सुहृदता कछु नाहि। आपनि को जैसे अपनो भज ताइ॥१७

भजन्त्थ भजतो इत्यादि—
अभज भजे पुरुष जानो एसे। तामें करुण पितर होत जैसे।
निरुपाधि धर्म सुहृदता जानि। सुन हो सुंदरी इह श्रेष्ठ मानि ॥१८

भजतोऽपि इत्यादि—
भजते भजे नाहि पुरुष जोहि। अभजत जन भजै कहा सोहि।
एक आत्मारामा दूजात्पकामि। मूढ़ गुरु द्रोह इह चारो जानि ॥१६

नाहन्तु सख्यो इत्यादि—
ऐसे सुनि हँसि सकल व्रज नारि। परस्पर कहत हीं दृष्टि टारि ॥
एक कहति इह आत्मरामा। नहि लोभित दृष्टि जैसे कामा ॥
एक कहति इह हो आप्तकामि। नहि गीत वासना मन मानि ॥
एक कहति इह मूढ़ ऐसे जानि। नहि पति धर्म्म कहातें बखानि ॥
ऐसे बिचारि परस्पर वानी। इह गुरु द्रोह निश्चय करि मानी ॥
कृष्ण बोले सकल अन्तर्यामी। सखि हो सुन मेरि एक कहानी ॥
चारो पुरुष में हम एकहु नाहिं। एक भेद कि बात तुम्हे हि सुनाहि ॥
भजत जने मैं भजहु नाहि। फिरि भजहुँ अनुराग बढ़ाहि ॥
अधनि जन धन पाई जो खोहि। सो चिंता बिनु दोउ सूभत रोहि ॥२०

एवं मदर्थो इत्यादि—
हे गोपिन तुमहि हो अनुरागि। लोक वेद धर्म छोड़े हम लागि ॥
परोक्ष जो तुम सब भजे मोके। अन्तर्द्धयान होइ हम सब देखे ॥
दोषारोपन अयोग्य तुमारो। जाते तुमहि प्रिया हमहुँ प्यारो ॥२१

न पारयेऽहमित्यादि—
कठिन गृह श्रृंखला तोड़ि दिनि। निरपक्ष होई साधु कृत किनि ॥
जा संयोग तें भजे तुमहि मोये। देवायु हि हमहुँते नहि सोये ॥
अपने को मान हुँ ऋनि तियारि। तुमहि प्रति यातु साधु हमारि ॥

इति रासे चतुर्थोऽध्याय:

इतं भगवतो इत्यादि= छंद

ऐसे कृष्ण कि मधुर प्रिय बोलन सुनि सकल गोपनारी।
विरहज ताप निवर्त्त थाई कृष्ण अंग पर्शि मनोरथधारी ।।१

तत्रारभत इत्यादि—

ताहि गोविंद होत अनुवृत रासलीला आरम्भ करि।
सब सुंदरी मिलि प्रीत मानहि अनन्यवद्ध वाहाँको धरि ।।२

रासोत्सवसंप्रवृत इत्यादि—

रास उत्सव संप्रवृत सब गोपी मंडल हि मंडित करि।
द्वयोर्द्वयोर्मध्ये प्रवेश किन एकहि कृष्ण वहु रूप धरि ।।३

यं मन्येरन्नभ इत्यादि—

कृष्ण निज निज निकट मानि कंठ लगाइ सब व्रजनारी ।।
ताहि सब देव सदारा सह त्रिमानआरोढये मदभारि ।।
द्वन्दभि ताहि औघट वाजये पुष्प वर्षा करि घन वारि।
गंधर्व्वपति हि सस्त्रिया सह कृष्ण विमल यश गाइ न्यारि ॥४

वलयाणां नूपुराणामित्यादि—

वलय-किंकिन-पायन नूपुर साजत हि सब गोप नारि।
कृष्ण वर्त्तमाना रासमंडल स्तुमल सब्दहि होत भारि ॥५

तत्रातिशुशुभे इत्यादि—

गोपी मंडल सोभित सुंदर भगवान यशोदानंदन हरि।
हेम मनि मध्य महा मारकत जैसे सुंदर हार पुथि धरि ॥६

पादन्यासैर्भुज इत्यादि—

पदगमक भुज चालन सुंदर रम्य हास भ्रू विलास करि।
भंजन मध्य चल कुच पट कुंडल लोल गंड स्थलोपरि ।।
स्वेद मुख कर रसना अग्रंथ हो कृष्ण बधू सब नारि।
गीत सब्द तडित जैसे मेघ चक्र चमकत शोभा करि ।।७

उच्चर्जगुरित्यादि—
ऊँचि गीत कृष्ण सह नृत्यमाना रागकंठि अनुराग भरि ।
कृष्ण पशि सब हर्ष मोदित जो गीत हि जगताभृत करि ॥
काचित् समं मुकुन्देन इत्यादि—द्वीपदि
कोई गोपी ऊँचि तान एक गाई । कृष्ण सह सुरतें सुर मिलाई ॥
ऋषभादिक सप्त स्वर आलापि । अमिश्रित होइ कृष्ण जो संलापि ।
तान मान गत ताल धरतहि । हाथन कि अभिनय भयो बातहिं ॥
चलत गत पग नूपुर वजाईं । एक कल सब्द सुलोल सुनाई ॥
थमक गमक तें सब चुपकाई । कृष्ण मन हर्षं वह सुख पाई ॥
ता को प्रियसि करिहु सम्मानि । साधु साधु ताहे कहिकै बखानि ॥९
तदेवं ध्रुवमुन्निन्ये इत्यादि—
कोई गोपि ध्रुव ताल सुर अलापि । ऊँचि सुरतें ऐसे राग प्रलापि ॥
ऐसे सुंदर झमक पद गाईं । पंचम सुर कि सों राग मिलाईं ॥
ताल धरत चलत गत ताईं । नाचति गमक ते धायो वताई ॥
कृष्ण सन्मान ताहि को वहु कीन । सौ प्रेम ते ताहे आलिगन दीन॥१०
काचिद्रास इत्यादि—
कोई रास परिश्रम होत जानि । कृष्ण पर्श ठाढ़ि निज सुख मानि ॥
कृष्ण बाहु निज स्कंध धरतायि । बलय मालिका श्लथ होत जायि ॥११
तत्रैकांसगतं वाहुमित्यादि—
कोई गोपि कृष्ण भुज अंस लाईं । घ्राण लेत हर्ष रोम पुलकाईं ॥
बाहु चंदनोत्पल सुगंध भरि । ताहि धरि चुम्वतहि बारि बारि ॥१२
कस्याश्चिन्नाट्य इत्यादि—
कोई गोपि नृत्यति परम सुठाना । कुंडल लोलहि झलकत काना ॥
जब निज गंडतें गंड मिलई । कृष्ण चर्बित ताम्बूल ताको दई ॥१३
नृत्यति गायती काचिदित्यादि—
कोई गोपि नाचति सुन्दर गाईं । कटि मेखला पग नपुर बजाई ।

पार्श्व ठाढ़ि कृष्ण हस्त पद लाईं । धरि श्रांत स्तनोपरि सुख पाईं ॥१४

गोप्यो लब्धाच्युतं कान्तमित्यादि—

सब गोपिन कृष्ण कांत जो पाईं । जैसे श्रीया एक वल्लभता लाईं ।
कृष्ण बाहु निज कंठ गहिताईं । कृष्ण संग विहरे कृष्ण यश गाईं ॥१५

कर्णोत्पलालक इत्यादि—

कर्णोत्पल अलक कुंडल राजै । स्वेद बिंदु दै कपोलन साजै ।
मुख सोभा अनुपम विराजै । वलय नपूर मधुर सुर बाजै ॥१६

गोप्य: समं भगवता इत्यादि—छन्द

सकल गोपिन कृष्ण संग नृत्यति सुन्दर गत ताल धरि ।
केश श्लथ हि पुष्प वर्षे पद रास सभा अमरा गीत करि ॥१७

एवं परिष्वंग इत्यादि—

आलिंगन कराकर्षन हिं प्रेम निरिक्षन उद्दाम हास परि ।
कृष्ण रमै व्रजसुंदरी सह जैसे बाल प्रतिबिंब भ्रम करि ॥१८

तदङ्गसङ्गं इत्यादि—

कृष्णांगसंग केश दूकूल कुच पट्टिका मुदा आकुलेंद्रिया ।
दृढ़ धरत ना पाईं राजन् अस्तमाल अभरन व्रजस्त्रिया ॥१९

कृष्णविक्रीडितं इत्यादि—

कृष्ण रास क्रीड़ा देखि सब देव स्त्रिया रहि मोहि ताहि ।
कामार्दित चन्द्र सगन सह विस्मृत होत गति रहि ताहि ॥२०

कृत्वा तावन्तमात्मानमित्यादि—

जेते हि गोपिन तेतेहि रूप धरहि श्रीभगवान् हरि ।
आत्माराम हो गोपियन सह रति लील जातें रमन करि ॥२१

तासां रतिविहारेण इत्यादि—

सकल गोपिन रति बिहारतें बदन हि श्रम जल भरि ।
कृष्ण निज कर सुखतें राजन्र मांजत प्रेम सों करुणा करि ॥२२

गोप्य: स्फुरत्पुरटकुंडल इत्यादि–द्वीपदि
ताहि व्रज कि सब गोप सुन्दरी । कृष्ण कर पर्शत हर्ष भईरि ।।
पुरट कुंडल गंड स्थल सोभा । सुधा हास ईक्षण मन लोभा ॥
कृष्ण को सन्मान ऐसे करि दिना । कृष्ण कीर्त्तियश गीत बहु किना ।।
ताभिर्युत श्रम इत्यादि–
ता गोपिन यूथ परिश्रम जानि । जमुना जल माँह प्रवेस हुँ ठानि ॥
मिल कुच कुंकुम रंजित माला । गंधर्वसि गाई चले अलि पाला ॥
श्रांत गजी सह गजेन्द्र जैसे आई । सेतु भिंद करि जल प्रवेसाई ।।२४
सोऽभ्यस्यलं युवतिभि: इत्यादि–
युवतिन सह जल सिचमाना । परस्परा जल वर्षहि समाना ।।
तहिं जलयुद्ध होत लागि भारि । परस्पर कोई काहु नहिं हारि ।।
गोपिन कृष्ण को चहुँ ओर घेरि । जल वर्षा करि जैसे घन फेरि ॥
प्रेम निरख सुन्दर मुख हाँसि । जलकेलि करतहिं चित्त हुलासि ।।
तहाँ कृष्णहु बहु रूप दरसाहि । स्वात्मरत होई रमै जल माँहि ।।
सब देवन पुष्पहि बरसाई । गजेन्द्र लीला सब देखत ताई ।।२५
ततश्च कृष्णोपवने इत्यादि—
कालिंदी उपवन सब पसारि । जल थल दिक् तट बन न्यारि ।।
पुष्प गंध ले वायु सेवित ताई । उड़त हि भृंग मातिं रहि जाई ॥
जैसे द्विरद करिनी मद माति । ऐसे कृष्ण सह सब गोप युवति ॥
इह शरद कि रास रस लीला । किन गोप बधु सह नंदलाला ॥२६
एवं शशाकांशु इत्यादि– छंद
सरद रातिहु चंद्र विराजित कृष्ण अनुस्मृत व्रजनारी ।।
सेबित सब अवरुद्ध सुरत सरत्काव्य कथा रसाश्रय करि ॥२७
संस्थापनाय धर्म्मस्येत्यादि–
सोहि भगवान जगत ईश्वर निज अंश ते इह बपु धरि ।
धर्म संस्थापन अधर्म नाशन युग युग सो इह अवतरि ।।

सोधर्म कि सेतु वक्ता कर्त्ता हो धर्म कि जोहि सदा रच्छा करि ।
हे शुकदेव जि सो अब कैसे परदार अधर्म हु आचरि ॥२८

आप्तकाम यदुपति इत्यादि–
आप्तकाम रहित बासना दोषित कर्म्म कौन अभिप्राय करि ।
कहो सुकदेव जि इह जो संदेह कटि जाय मन कि हमारि॥२९

धर्मव्यतिक्रमो दृष्ट इत्यादि—
देखो परत्तीत धर्म अतिक्रम ईश्वरन कि समर्थ भारि ।
तेजिवन कि दोष नहिं जानाहि जैसे अग्नि सर्व्व भुगकारि ॥

नैतत्समाचरेत् इत्यादि–
अनिस्वर जने इह कदाचित् सो नहिं आचरे मन माँहि ।
मूढ़ बुद्धि चरै नाश होत हि रुद्र बिनु बिष पिवत ताहि ॥३१॥

ईश्वराणां वचः सत्यमित्यादि–
ईस्वर कि बचन सत्य इह जानि तामें कोई एकहु आवरि ।
सो वचन में जो सुबचन होय बुद्धिमान सो आचरन करि ॥३२॥

कुशलाचरिते इत्यादि–
कुशल आचरन करि याको इह कछु अर्थ प्रयोजन नहिं ।
विपर्य्ययतें अनर्थ नहि याको ताको निरहंकार कहि ॥३३

किमुताखिल सत्वानामित्यादि—
त्रिलोक मधि पंचि पशु नर सकल जन देवादि जोहि ।
ईस्वर सेवित जन कि जानि कुशल अकुशल द्वौ नहि ॥३४

यत्पादपंकजपराग इत्यादि–
जो पद पंकज पराग सेवित भक्तजन नित्य तृप्त होई ।
जोग-प्रभावतें सविधूत इह कर्म गुनबंध कटोई ॥
मुनय स्वतन्त्रता आचरन करि उनहिं को नाश होत नाईं ।
सो ईस्वर अब इच्छा बपु धारे ताहे गुनबंध कहाँ ते आईं ॥

गोपीनां तत्पतिनाञ्च इत्यादि–
गोपियन हु ता पतियन कि सकल प्राणि देहा धारिन को ।
जो अंतर्चरत सो देह धारहिं एसो क्रीड़ा योग्य होत ताको ॥
अनुग्रहाय भक्तानामित्यादि—
भक्त जन अनुग्रह कारन मानुष देहा करि आश्रय ।
नरानुरूप क्रीड़ा जो किन सुनत भक्त तत्परा होय ॥३७
नासूयन् खलु कृष्णायेत्यादि—
व्रजवासीजन असूया ना किन कृष्ण मायातें मोहित भई ।
निज निज स्त्रिया निकट आपनि ऐसे हि मन मानई ॥३८
ब्रह्मरात्र इत्यादि–
ब्रह्म रातिन उपावृत जानि हु कृष्ण अनुमोदित सो सब हि ।
भगवत प्रिया अनिच्छा गोपियन निज निज गृह जावहि ॥३९
विक्रीडितं व्रजवधूभिरित्यादि–
व्रजवधू सह रासलीला किन वृंदावन कृष्ण हि ।
श्रद्धायुक्त होइ सुनत जो हि अथबा इह कोई वर्नंतहि ॥
श्री कृष्ण कि श्रेष्ठ एक भक्ति हु निश्चय ताको इह मिलतहि ।
हृदि काम रुजहु नास जातहि सो सर्व्वज्ञाता तत्व कि होहि ॥४०
रास पंचाध्यायि श्री भागवत सुकदेव जू यह विस्तारहि ।
गोविंदचरनदास दीन हु भाषा पद करि गावहिं ॥४१

इति रासे पंचमोऽध्यायि भाषापद गीयते ॥५

समत १८८६ साल माहे १२ कर्त्तिक सुदि द्वादशि तिथौ आदित्यवारे
द्वादश दंड वेला उदित समये श्रीधाम वृंदावने योगपीठ
स्थाने इह रास पंचाध्यायि भाषापदगीतं
समाप्ति स्यात् ।

श्री वृन्दावन धीरशमीरकुञ्ज जगदीश पण्डित राज मानयि ।
ताहि श्री सनातन माहान्त को इह भाषा गीत लिख देयि ॥१

॥ श्री चैतन्यचन्द्राय नमः ॥

❀ श्री राधादामोदरो जयति ❀

अथ भजनपद्धति लिख्यते

सुमरौं कृष्ण चैतन्य हरि, जय जय युगल प्रकास ।
कृपा दृष्टि मोपर करौ, लहौं वृन्दावन वास ॥१॥
जाकरन हरि गौर भै, कहत जथामति मोर ।
चैतन्य चरित अगाध है, काहु न पायौ ओर ॥ २ ॥
एक समय बैठे हरी, सोस महल के माहि ।
निज तन देखि विस्मय भये, भाव कुवरि के चाहि ॥३॥
इही चाह मन में भई, किय प्यारी कौ रूप ।
निज रस आस्वादन करै, लहैं जुगल स्वरूप ॥ ४ ॥
अन्तर में है श्यामता, बाहिर हेम प्रकास ।
प्रेम पदारथ दें सबैं, धर्यौ जु अपने पास ॥५॥
यह आसा धरि चित्त में, वरनौं चैतन रूप ।
स्याम स्यामा मिलि भये, गौर अनूप सरूप ॥६॥
महा प्रभु जू कौ प्रेम कछु, मोपैं कह्यौ न जाय ।
सागर कौ है वारि सब, गागर में न समाय ॥७॥
नित्यानन्द वन्दों सदा, लखि ग्रन्थन कौ सार ।
रोहिनिनन्दन प्रगट भै, शेस जासु अवतार ॥८॥
श्री अद्वैत भगवान हैं, नाहिं जु न्यारौ रूप ।
अगतिन गतिदायक सुखद, भक्ति ज्ञान के रूप ॥९॥

श्री अद्वैत कृपा करो, हो तुम परम सुजान ।
दीन हीन मोहि जानि कें, देउ भक्ति रसदान ॥१०॥
सब गौर भक्त वृन्द कों, मेरे कोटि प्रणाम ।
अपनो जानि कृपा करो, नाहि मोहि कहुँ ठाम ॥११॥
गौर वृन्द को सुजस अति, नैकहु कह्यौ न जाय ।
स्वल्प बुद्धि हम जीव हैं, कैसे वरनैं ताय ॥१२॥
निज चित मधि अवलम्ब हित, कीनो जतन अनूप ।
रसना सदा रटिवो करो, प्राण सनातन रूप ॥१३॥
रूप सनातन चरन है, जाको दृढ़ विश्वास ।
सो मेरे प्रेम इष्ट हैं, हौं ताकौ निज दास ॥१४॥
मन वच क्रम ध्याऊं सदा, दोऊ परम दयाल ।
जिनके लिए प्रगट भये, गोविन्द मदन गुपाल ॥१५॥
ऐसी कृपा कीनि दीनों, दृढ़ वृन्दावन वास ।
सबे रहस्य जनाय कें, राख्यौ अपने पास ॥१६॥
अद्यपि परिकर में रहैं, लहैं जु रूप अपार ।
को कवि ऐसे जगत में, पावै छवि को पार ॥१७॥
गोपाल भट्ट परिकर सहित, वंदौं बारहिं बार ।
दीन हीन द्वारें परे, कौन उतारैं पार ॥१८॥
गोपालभट्ट सुमिरन करौं, दृढ़ वृन्दावनवास ।
जिनके मस्तक राजें सदा, राधारमन विलास ॥१९॥
राधारमन की सेवा करे, धरे जु सखी सरूप ।
प्रेमानन्द में बूड्यौ रहै, ईहे बात अनूप ॥२०॥
श्री रघुनाथ भट्ट वंदौं, है जू परम उदार ।
श्रीमद् भागवत को रस, जानत हैं सब सार ॥२१॥
सिस्य सेवा आश्रम इह, बन्धन नाहिं जू एक ।
कृष्ण प्रेम में छकें रहें, इह जिनकी है टेक ॥२२॥

रहैं निकट ब्रजनाथ के, श्रीभट्ट जू रघुनाथ ।
सदा सखी रूप में विचरैं, छाजैं परिकर साथ ॥२३॥
श्री रघुनाथदास को हौं, जनम जनम को दास ।
मानस सेवा लीन मन, श्री राधाकुण्ड में वास ॥२४॥
रस ग्रन्थन वरनन करैं, हरैं जगत को ताप ।
रसना ऐसे कृपाल को, करौं निरन्तर जाप ॥२५॥
जीव गुसाईं जीवन को हैं सदा सुखदाइ ।
राधा दामोदर रीझि, कैं आप अपनाइ ॥२६॥
निजहि सक्ति दे जीव कौं, सुनैं ग्रन्थन को सार ।
विद्या रूप प्रगट भये, जानौ जू निरधार ॥२७॥
श्रीमद्भागवत ग्रंथ जु अभ्यास हैं ऐसे ।
हाथ में आमलो रहैं और निजु कौं जैसे ॥२८॥
रूप सनातन दोउ मिलि भक्ति जीव में अरापि ।
गुविन्द मदन गोपाल के दोऊ सेवा में थापि ॥२९॥
रूप सनातन दुहुँ करैं जीव प्रीति अति भारी ।
भ्रातृ पुत्र प्रवीन जानि किये सव अधिकारी ॥३०॥
श्री गोविन्द सेवा में आप वड़े प्रवीन ।
दृढ़ वृन्दावन वास कियो कृष्ण प्रेम में लीन ॥३१॥
जिनको फल जु प्रगट भये श्री गुसाईं कृष्णदास ।
कृष्ण प्रेम में लीन है नाहिनें जग को वास ॥३२॥
निकट स्यामा जु स्याम को निरखैं रास विलास ।
ऐसे गुसाईं कृष्णदास जु पूरौ मन की आस ॥३३॥
श्री नन्दकुंवर गुसाईं जु नन्दलालहि लड़ाय ।
वड़े गम्भीर आस हिय थाह कोऊ नहिं पाय ॥३४॥
जिनकौ भजन फल जु है सूनो मन दैं भाई ।
देखि लेहु प्रगट भये श्री ब्रजकुंवर गुसाईं ॥३५॥

श्री व्रजकुंवर गुसाईं जु भयेहिं रूप अनूप।
गोविन्द गाथा गावै ध्यावै गोविन्द रूप ॥३६॥
जिनको पुण्य प्रताप लह्यौ लाला वृन्दावन।
गुन देखि अपार नाना रूप महा सुहावन ।।३७॥
कुंवर वृन्दावन प्रगट भै जानौ प्रेम सरूप ।
ईह तन में मिलि झिले आप गुसाईं रूप ॥३८॥
सो आनन्द जू प्रगट कछू मोपै कह्यौ नहिं जाहिं।
देखि लै प्रगट गुसाईं गोपी रमन के मांहिं ॥३६॥
श्री गुसाईं गोपीरमण, हैं जु परम उदार।
साधु सेवा परायन जाने, कृष्ण प्रेम कौ सार ॥४०॥
संकीर्तन में पड़े रहैं लहैं नाम अपार।
ऐसे गुसाईं कृपा करि, मोहि उतारो पार ॥४१॥
मनरु वच क्रम करि ध्याऊं, श्री गुसाईं व्रजलाल।
दीन जानि कृपाजु करौ, हौ तुम दीनदयाल ॥४२॥
सब अवगुन मोपै भर्यौ. है गुन नाहिं जु एक।
निज जन जानि कृपा करौ, निर्भै मन की टेक ॥४३॥
कर जोरी विनती करौं, गुसाईं नवल जु लाल ।
सेवा परायणहि रहैं. निरखि दामोदर लाल ॥४४॥
सङ्गीत विद्या में निपुण हैं महा चतुर सुजान।
वीन लै बजावै सदा, गावै मनोहर तान ॥४५॥
रिझ्यौ रिझवार कछु रीझि, दीनौ वस्तु अपार।
पुत्र भये गोविन्द लाल जू उभै परम उदार ॥४६॥
आठ प्रहर चौसठि घरी, भजन में हि मन दीन।
श्री गोविन्द चरन में मन रहे, हैं जु परम प्रवीन ॥४७॥
इह सबहि नित्यसिद्ध है, मन में जानि जु लेहु।
जीव उधारन कारनैं, प्रगट करैं निज देहु ॥४८॥

गुरु गोष्ठी सब इष्ट हैं, विचरें परिकर मांहि।
इनकौं कबहु जानौं मति, ईतर नारि नर नाइ ॥४९॥
इह पदार्थ पहिचान कौं, नाहिं जो आन उपाय।
साधु चरन रज सीस धरैं, सीत साधुनि को खाय ॥५०॥
साधु संग विचरैं सदा, बसैं साधुनि के पास।
इव पदार्थ जान्यौ परै, पूरै मन की आस ॥५१॥
यह प्रबन्ध जु कह्यो हम, मन वच करि विश्वास।
सुनै सुनावै जो कोऊ, पहुंचे हरि के पास ॥५२

इति भजन पद्धति ग्रन्थे श्री गुरुवन्दना

प्रथम विभाग

प्रिया सहित कृष्ण इष्ट है, सन्त जननि के प्रान।
परम हंस नम करि लऊं, भक्ति सुधा कौ पान ॥१॥
रसिक जन मन हंस मन, यह कीनौ निरधार।
भक्ति तत्व रस अमृत है, ज्ञान कर्म सब खार ॥२॥
भक्ति रस अमृत सिन्धु है को कवि पावे पार।
रूप गुसाईं प्रथम में, कीनौ न्यारौं निरधार ॥३॥
राधा सह श्रीकृष्ण जू, प्रगट स्वयं भगवान।
सब तत्वनि तें भगति तत्व, जानि लेहु प्रधान ॥४॥
निज रसनाहि पावन हित, कछु कहियै नहिं जात।
सागर कौ वारि किधौं, नाहिं जु सीप समात ॥५॥
भक्ति महारानी को जो, नेंक आप अपनाय।
सबै क्लेश तबहिं सो जू, आप सो आपहिं जाय ॥६॥
सबै सुख सबै सम्पदा, आवै आपहि आप।
चारि प्रकार मुक्ति लौं, मन में नहिं कछु भाव ॥७॥

यह बात श्री कपिल मुनि, भागवत में गाय ।
दुर्लभ भक्ति है जगत में, आपहि वेद बताय ॥८॥
प्रेमानन्द की छकनि, गाढ़ौ मन जब होय ।
श्रीकृष्ण जू तिन ढिग में, ठाड़ौ आपतें होय ॥९॥
मन की गति है कृष्ण में, मुक्ति चाह नहिं और ।
प्रेमानन्द में डूब्यौ रहै, रसिकनि के सिर मौर ॥१ ॥
रैंनी बनी है प्रेम की, मन पढ़ लेहु जु बोरि ।
कृष्ण रङ्ग सदा एक रस, भूल कबहुं मति छोरि ॥११॥
इहै भक्ति द्विविधि पुनि, वैधी राग विशेष ।
अब वैधी भक्ति कहूँ, पाछे राग की लेख ॥१२॥
यह विधि भक्ति भेद हैं, जानि लै तीन प्रकार ।
प्रथम साधन रूप दूजौ, भाव रूप निरधार ॥१३॥
तीजौ भक्ति भये सब, शास्त्रन में गावे ।
बहु भेद और भक्ति को, को कवि पार जु पावै ॥१४॥
वैधी भक्ति लच्छन कहौ, सुनौ सब रसिक सुजान ।
यह भक्ति सबकौ मूल हैं, मानि लै मन करि ज्ञान ॥१५॥
मन अनुराग नहिं करैं, भक्ति भेद उनमान ।
ताहि वैधी भक्ति करि, सबै लेहि पहिचानि ॥१६॥
कोउ भाग्य उदय, श्रद्धा हरि में होय ।
आसक्ति गाढ़ बंधि नाहि, विषय छांड़ि नहिं जोय ॥१७॥
ऐसो जिनको देखिये, निरन्तर बुध्य प्रचार ।
सुखदाइक जानौ ताहि, वैधी भक्ति अधिकार ॥१८॥
श्री गुरु चरन सरन लहौ, सीखौ धर्म की रीति ।
गुरु सेवा विश्वास दृढ़, साधु पथ में प्रीति ॥१९॥
सतधर्म पूछौ हरि लिए, त्यागौ भोग विलास ।
उद्यम देह निर्वाह कौ, गङ्ग द्वारावती वास ॥२०॥

एकादसी व्रत अरु जागरन, भूलि कबहुं मति छोड़ि ।
पीपल आवलौ पूजियै नाहि इनकी धौं तोड़ि ॥२१॥
यह दस विधि ह्वै भक्ति की, प्रथम अङ्ग करि जानि ।
हरि विमुखन कौ त्यागौ सदा शिष्य बहुत मत ठानि ॥२२
वेद पुरान गावै सदा, सुनि हौं दैकैं कान ।
बहु आरम्भ सौं डरौ, सास्त्रन अनेक बखान ॥२३॥
व्यवहार में उदार चित्त सोग न कीजै नेक ।
और देवन कूं निंदौ मति, दुख और नहिं देख ॥२४॥
सेवा नामापराध तें, डरिबौ करौ सदाई ।
गुरु हरि साधु निन्दा सुनि, मारिये कै उठि जाई ॥२५॥
यह दश अङ्ग त्याग दियौ, लियौ दस अङ्ग निरधार ।
वीस अङ्ग भक्ति रानि के, मिलिवै को निज द्वार ॥२६।
गुरु पाद आश्रय करै, कृष्ण धर्म में लीन ।
गुरु सेवा में विश्वास इहै, बीस सौं उत्तम तीन ॥२७॥
छापा तिलक करैं गरैं, धरैं तुलसी की माल ।
कबहुँ नहिं आवै जु पास, जम के दूत विकराल ॥२८॥
हरि प्रसाद सौं नियम करि, खान पान परिधान ।
प्रेम सो भीने नित्य करि, रीझैंगे भगवान ॥२९॥
भूमि परि प्रनाम करि, रहौ ठाड़ौ हरि गुरु देखि ।
मन्दिर लौं सङ्ग जाइये, यह है चलन विशेषि ॥३०॥
ग्रह तें मन्दिर जाइये, परिक्रमा दे चारि ।
पूजन परिचर्य्या कीजिए, मन कौ निश्चय धारि ॥३१॥
गीत गाइकैं कीर्त्तन करौ, जप मनहिं मन माहिं ।
विनती प्रचार करौं स्तव, पाठ मांहि अवगाहि ॥३२॥
प्रसाद आस्वादन करौ, अरु चरणामृत पान ।
प्रसादी माला उर में धरौ, सुगन्ध धूप को घ्रान ॥३३॥

श्रीमूरति कौ परस करो, निरखि मनोहर रूप ।
आरती में विसेस करि, देखौ जुगल सरूप ॥३४॥
समय समय उत्सव करौ, जथा सक्ति विचारि ।
कथा सुनौ रसिकनि सहित, देखौ कृपा अपार ॥३५॥
कृष्ण सुमिरन करौ नित, ध्यावो कृष्ण कौ रूप ।
दास्य भाव सुन्दर जु अति, सख्यभाव अनूप ॥३६॥
आत्म निवेदन करौ प्रिय, वस्तु सब आनि ।
हरि निमित्त चेष्टा करौ, सरण सरणागत को जानि ।३७।
भक्तन की सेवा करौ, तुलसी में करि प्रीति ।
मथुरा में वसौ सदा, देवो शास्त्र में चीत ॥३८॥
साधु सङ्ग महोत्सव करो, जथा वृत्ति करि विसवास ।
कार्तिक दामोदर पूजि कैं, जाउ लड़ैती जू के पास ॥३९॥
जनमोत्सव आदि लै सव, करौ उत्सव बहु प्रीति ।
श्रद्धायुत होय मूर्त्ति की, धरौ सेवा में चित्त ॥४०॥
श्रीमत् भागवत की कथा, सुनौ रसिकनि के संग ।
छिन छिन माहिं बढ़ै अति, प्रेमानन्द तरङ्ग ॥४१॥
एक रस के उपासक अरु, कोमल होय सुभाव ।
तासौं निसङ्क सीखियै, सबै भजन को भाव ॥४२॥
भक्ति चौसठि अङ्ग कह्यौ, गहो विसवास विचारि ।
इह चौसठि अङ्ग मधि, उत्तम पञ्च निरधारि ॥४३॥
भगवत भागवत सेवन करौ, मथुरा रसिकन के सङ्ग ।
इह पाँचौ मन मैं जानि, करौ कीर्तन में रङ्ग ॥४४॥
भक्ति पटरानी के जू, अनगिनती हैं अङ्ग ।
गनन में जु आवे नहीं, कवहुँक सिंधु तरंग ॥४५॥
एक अङ्ग में बहु अङ्ग हैं, पुनि चौसठि अङ्ग प्रधान ।
अम्बरीष बहु अङ्ग में, एक परीछित जान ॥४६॥

वैधी भक्ति निर्नय भयौ, करौं जु राग (भक्ति) विचार ।
इह बात अति कठिन है, नाहिं जु पाऊं पार ॥४७॥
॥ इति चौसठि अङ्ग भक्ति वर्णनं नाम दुतिय विभाग ॥

—※—

चित्त में विचार करौ, अब सुनौ राग स्वरूप ।
स्वाभाविक लगन गोविन्द में, यहै राग कौ रूप ॥१॥
ईह राग ते कृष्ण में, करौ जु गाढ़ी प्रीति ।
रागात्मिका भक्ति की, बरनी है यह रीति ॥२॥
इह रागात्मिका भक्ति और कोउ नहिं पाय ।
नंदादिक परिकर में उह, नित्त रह्यौ है छाय ॥३॥
इह रागात्मिका भक्ति, विविध प्रकार करि जानि ।
प्रथम कामरूपा दूजौ, सम्बन्ध रूप पहचानि ॥४॥
सो कामरूपा भक्ति है, जानौ मन जु माहिं ।
श्रीकृष्ण सुख जानि कै, करै भोग की चाहिं ॥५॥
इह कामरूपा प्रेम है, श्री शुकदेव प्रमान ।
ब्रजदेविन में बसे सदा, मन में निश्चय जान ॥६॥
श्रीकृष्ण परिकर अनुगत होय, जु भजै अविराम ।
रागानुगा भक्ति जु है, कहिये ताकौ नाम ॥७॥
अपने अपने भाव करि, सेवा में चित देहि ।
श्री गुरुदेव उपदेश तें, सिद्ध देह जू लेहि ॥ ८ ॥
मानसी सेवा कौं करौ, ब्रजवासि अनुगत होय ।
संकीर्त्तन में मन धरौ, स्थिति साधक देह ॥ ९ ॥
जो कोउ इहि विधि सेवा नित हीं करै निज टेक ।
श्यामा स्यामहि रूप तें चित्तहि टरै न नैक॥ १०

इति श्री भजन पद्धति ग्रन्थे साधन भक्ति
वरननं नाम त्रितिय विभाग

———

श्री चैतन्य आनन्दघन, निज तन प्रेम स्वरूप।
श्री वृन्दावन चिदानन्द हैं, सदा सनातन रूप ॥१॥
कृष्ण सुमिरौ परिकर सह, हितदायक नित पास।
कृष्ण कथा श्रवण करि, करौ ब्रज में नित वास ॥२॥
ब्रज की रज में पर्यौ रहौं, यह आसा निसि भोर।
कृपा दृष्टि मोपर करौ, रसिकन के सिर मोर ॥३॥
ब्रज चौरासी कोस सब, चिदानन्द मय धाम।
गो गोप सहित हरि जहाँ, राजत है अभिराम ॥४॥
रतन जटित अवनि सब, कलपतरुन की डाल।
पात पात चिदानन्दमय, फुलफल परम रसाल ॥५॥
धेनु चरत चिदानन्द मय, वाजत वेनु रसाल।
बिहरत अति आनन्द सौं, निरखौ मदनगोपाल ॥६॥
विरुध लता बस कलपतरु, पारिजात सब फूल।
घाट बन्यौ है रतन जटित, झलकत जमुनाकूल ॥७॥
ब्रजवासी जन रहत हैं, सत् चिदानन्द सरूप।
बानी उच्चरैं गीत रसमय है बात अनूप ॥८॥
नख सिख तैं सुन्दर तनु, चालि नृर्त्य समान।
नृत्य गान में जो सुख उपजै, को कवि करै बखान ॥९
सरोवर चिदानन्दमय, पय सब अमृत रुमान।
चारि रङ्ग के कमल मैं, मधुप करत बहुगान ।१०
ब्रजभूमि सदा एक रस, प्रलयातीति करि जान।
श्रुति पुराण सब संहिता, निज मुख देत प्रमान ॥११
न्यारौ आत्मा देह तैं अरु, रहै देह मैं व्यापि।
ऐसै ब्रज ब्रह्मांड में, रहैं निरन्तर आपि ॥१२
चिदघन ब्रह्म तन्यौ आप, ब्रज देखि अनोठो ठाम।
दम्पति दोउ विहरत जहाँ, मिलि कै स्यामा स्याम ॥१२

ईह पूर्णानन्द रूप ब्रज, राजत जग के माहिं ।
मोहै माया कृष्ण कौं, कोउ देख नहिं जु पाय ॥१४
कर जोरि विनती करौं, मन होय मति अति दीठ ।
ईह ब्रज कौं भूलि करि, नाहिं देह कभू पीठ ॥१५
ऐसैं मन ह्वै है कभूं, पड़ि रहु जमुना तीर ।
तरु साखा निरखौं सदा, नैंननि भरि २ नीर ॥१६
श्री ब्रज मण्डल प्रलय में, कबहु नाहिं जू आय ।
विष्णु चक्र में रहै नित, इह सब वेद बताय ॥१७
इह ब्रज धरनी में है, निरवधि ऐसे होय ।
ज्यौं बारिज बारि में है, वारि ते पृथक न सोय ॥१८
ब्रज सहस्र दल कमल करि वेद पुराण जु गाय ।
सो कमल मधि वृन्दावन, रसिकनि के मन भाय ॥१९
वीस कोस बृन्दा विपिन, हरी देह करि जानि ।
एक प्रेम को प्रवेस, जहाँ नहिं कर्म अरु ज्ञान ॥२०॥
कहा कहियै महिमा सब, बृन्दावन निज धाम ।
चलत फिरत सुनिग्रत जहाँ, राधावर के नाम ॥२१
रतन जटित अवनी जु सब, कलप तरुन की छांह ।
लाडिली लाल विहरत सदा, गहैं सखिन की बाँह ॥२२
लता द्रुम में लपट्यौ रहै, बिच बिच कुंज कुटीर ।
सीतल मन्द सुगन्ध जहाँ, वहत त्रिविध समीर ॥२३
षटरितु जहाँ नित वसै, धरिकै निज २ रूप ।
समय समय सेवा करैं, निरखे जुगल सरूप ॥२४॥
रितुराज वसन्त की जहाँ, है वड़ौ बड़ाई ।
सोभा लिए रहत सदा, है सबको सुखदाई ॥२५
वेष्टित जमुना वारि सौं, तट में अमल कलोल ।
वृन्दावन पहिरै मनौ, इन्द्र नील मनि चोल ॥२६

चारि रङ्ग के कमल जहाँ, लाल नील अरु पीत ।
सेत कमल सुहावनौ, मधुकर गावै गीत ॥२७
लता सहित द्रुम झुके रहैं, परसैं निरमल नीर ।
फुल फल पत्र सुहावनौ, निरखौ जमुना तीर ॥२८
जहाँ मोर कुहकैं सदा, कोयल गावै गीत ।
सुक सारी कहै कथा, सुनिके उपजै प्रीत ॥ २९ ॥
श्री बृन्दावन आनन्दमय, सबके ऊपर राजत ।
सारदा सतमुख सौं, कछु कहिवे को लाजत ॥३०॥
खग मृग तरु लता अरु, सोहैं कुंज कुटीर ।
बापो तड़ाग सुहावने, दह में निर्मल नीर ॥ ३१ ॥
बहुत द्रुम करि सघन बन, घन सौं रह्यौ जु छाय ।
जुगल मधुकर रहैं जहाँ, गीत मनोहर गाय ॥३२॥
चरण चलौ बृन्दाविपिन, नैंन बृन्दावन देखि ।
रसना बृन्दावन रटौ, बृन्दावन चित लेखि ॥३३॥
जनम जनम बृन्दावन बसौ, मन में करौ यह टेक ।
तृण लता ह्वै परयौ रहौं, याहि न छांड़ौं नैंक ॥३४
जाहें त्यागें बन्धुजन, मात पिता अरु भ्रात ।
ताहि कृपा करै बृन्दावन, यहै रसीली बात ॥३५
टूक टूक ह्वै जात तन, पावै दुःख जु अनेक ।
तउ न छांड़िये बृन्दाविपिन वर, मन में राखि विवेक ॥३६
शिव उद्धव रु चतुरानन करैं, जु मन में चाह ।
गुल्मलता ह्वै बसैं तहाँ, बृन्दावन रज माँहिं ॥३७॥
श्रीपति श्रीमुख कहैं जब, विपिन राज की बात ।
वैकुंठ छांड़ि इन्दिरा, बसिवै कौ ललचात ॥३८॥
बृन्दावन चिदानन्दमय, स्यामा स्याम सरूप ।
रसिक जन निरखै जु सदा, बृन्दावन कौ रूप ॥३९

दल सहस्त्र कमल मध्य, करि बृन्दावन धाम ।
इह कमल मध्य अष्टदल, ताकौ करौं बखान ॥४०॥
दछिन ओर रास मण्डल, प्रथम पांखड़ि जानि ।
रास निरन्तर करै जहां, आपहि रसिक सुजान ॥४१॥
अग्निकोन में सोहै दल, निधुवन धीर समीर ।
जहां हरि विहरत सदा, गावत मधुकर कीर ॥४२॥
इह पूरव दल जानि लै, भयौ केसी जहाँ निपात ।
कोटि गङ्गा स्नान फल, मोपै कह्यौ न जात ॥४३॥
चौथौ दल चीर घाट जु, निहचै मन में जान ।
चीर हरन गोपिन के जहा कीने हैं भगवान ॥४४॥
वायव दिसा में पञ्चदल, सूरज मन्दिर राजत ।
सुरज द्वादस हरि जू के, पूजन लिए विराजत ॥४५॥
छटे दल मध कालीदह, जाके निर्मल नीर ।
काली कौ कीनौ दमन, महा सुहावनौ तीर ॥४६॥
सातों पाँखड़ी जज्ञस्थल, यहाँ अनूपम ठाम ।
जज्ञ पत्नीन पर कृपा करि, भोजन कियौ कृष्ण राम ॥ ४७
नैरित कौन में अष्ट दल, करौ मन में ध्यान ।
व्योमासुर भयौ वध जहाँ, संहिता वाराह प्रमान ॥४८॥
ईह अष्टदल कमल मधि, जोग पीठ जू होय ।
रतन जटित मन्दिर जहाँ स्यामास्याम विगोय ॥४९
देखौ मन्दिर वन्यौ अद्भुत जोग पीठ के माहि ।
छारही या मन्दिर पर कलप तरुन की छाँहि ॥५०
भाँति भाँति के लगे नग झलकत काम जड़ाव ।
वा मन्दिर के सोभा पर बार बार बलि जाँव ॥५१
फटिक मनी की नीती वनी इन्द्रमनी की छात ।
बिच बिच काम वन्यौ मनोहर निरखत नैन सिरात ।५२

चौखट बनी है इन्द्रमनी की, भाँति भाँति के काम ।
समय समय की सेवा करै द्वार सखी अभिराम॥५३॥
लालमनी के किवार बने मोहत हैं अति भारी ।
जो द्वारैं निकसत सदा सुन्दर प्रीतम प्यारी ॥५४॥
झरोखा जु झलकत जहाँ जाली बनी अनूप ।
जो जाली है निरखे सदा सखी सब जुगलसरूप ॥५५॥
नाना भांति की चितराम जहां खग मृग द्रुम अरु बेलि ।
कचौसठि कोक कला राजै जहाँ देखि करत है केलि ॥५६॥
मन्दिर की चहुं ओर बनी अद्भुत दीरघ चौक ।
फटिक मनि की फरस बँधी मिटै नैन की सोक ॥५७॥
चंद्रमणी की होद बनी निर्मल नीर जु ताहिं ।
चन्द्रमुखिन की झांइ परै सबै चन्द ह्वै जाहिं ॥५८॥
मन्दिर मध्य रतन जटित सिंहासन परम अनूप ।
तामैं राधा दामोदर विराजत जुगल सरूप ॥५९॥
मन्दिर मध्य पलङ्ग है सोभा कही नहिं जाहि ।
पाटी बनी हरित मनी की अद्भुत काम जु ताहि ॥६०॥
पाये हैं चन्द्रमनी के जड्यौ अनूपम लाल ।
लगे घुंघरू चहूँ ओर सों सोहे परम विशाल ॥६१॥
जरकसी तारनि सौं बुन्यौ बिछौ है सेज अनूप ।
सेज बन्ध खेच्यौ जाहि आय मंजरी रूप ॥६२॥
यह पलंक की सोभा कछु कहि सकै नहिं बैन ।
उपरि चादरि सुहावनो ज्यौ दूध की फैन ॥६२॥
लगे गेदुवा मनोहर, छबि है अपरम्पार ।
ऐसे पलंक बैठे दोउ, राधा नन्दकुमार ॥६४॥
इहि विधि पौढ़े हैं दोउ अलसाने हैं जू नैन ।
मानौ सब जीत कै आनि सोयौ है मैन ॥६५॥

भुज पर भुज मेलि कै, दै अङ्ग में निज अङ्ग ।
कंचन वेलि लपटी रही ज्यों तमाल के सङ्ग ॥६६॥

इति श्री भजन पद्धति श्री वृंदावन महिमा
वर्णनं नामचतुर्थ विभाग:

अब कहूँ सुनो रसिक जन प्रात समय की बात ।
सखि वृंद संग लै वृंदा जु स्यामा स्याम जगात ॥१॥
सुख सौं हैं पौढ़े दोउ करिलै मन ध्यान ।
सखि सब आनि जगावैं गावैं भांति भांति की तान ॥२
अनगिनति है सखी जहां को कवि पावै पार ।
श्री शुकदेव मुनि पै भैं नहीं नेंक निरधार ॥३॥
सब सखिन लैं आठ सखी उत्तम हैं करि जान ।
आठ सखिन में ललिता जु को जानि लेहु प्रधान ॥४॥
साधक भजन काज कहौं अष्ट सखिन के नाम ।
नाम लेत पावै नवल वृंदावन निज धाम ॥ ५ ॥
ललिता जू विशाखा अरु चित्रा चम्पक बेलि ।
तुंग विद्या इन्दुलेखा करै नाना विधि केलि ॥ ६ ॥
रंग देवी सुदेवि प्रिया जु है अति प्यारी ।
यह सखिन की हौं जाऊँ वार बार बलिहारी ॥ ७ ॥
श्री ललिता सखी वड़ी निज नाम है जाकी ।
चारु गोरोचनाहि सी अङ्ग कांति है ताकी ॥ ८ ॥
सप्त विंस दिन प्रिया सौं ऊपर वड़ी करि जानि ।
मोरपिंछ से बसन हैं करिलै मन में ध्यान ॥९॥
जिनके साथ रीझ करि विरिले स्यामा अरु स्याम ।
यह ललिता जु कौं मेरे हैं कोटि कोटि परनाम ॥१०॥

ललिता के जूथ में सुनौ अष्ट सखिन कौ नाम ।
रतनप्रभा रतिकला, भद्रारेखा सुभद्रा ठाम ॥११॥
सुमुखी अरु धनिष्ठा सखी सेवा करैं हैं नित्त ।
कलापिनि कलहंसी सखी, हरै सखिन कौ चित्त ॥१२॥
श्री विशाखाजी सखिन में अति प्यारि करि जानि ।
बिजुली सी निज अङ्ग शोभा वरु तारावति जानि ॥१३॥
प्यारी जू के वयस सौं साहसहि इहै जान ।
वस्तु सेव में रहै वरत इहै जु मन में ठान ॥१४॥
माधवी मालती विशाखा की गण में है परधान ।
गन्धरेखा कुंजरिजू है मेरे हैं निज प्राण ॥१५॥
अरुनी चपला देवी सेवा में रहे सदाई ।
सुरभी सुमुखी को जु जस वेदन में गाई ॥१६॥
और अनेक सेवा करै रहै पिय प्यारी पास ।
विशाखा जू कौ प्रनाम करि पूरौ मन की आस ॥१७॥
चम्पकलता वंदौं सदा चम्पासी निज अङ्ग ।
सोसनी सारी पहिरै जाको अद्भुत रङ्ग ॥१८॥
रसोई की सेवा है तिनकी निज अधिकार ।
ऐसे चम्पकलता है मेरे प्राण अधार ॥१९॥
सुचरित कुरङ्ग नयनी अरु बन्दौ चंपक बेलि ।
मनि कुण्डलि मण्डनी सौं करै नाना विधि केलि ॥२०॥
चन्द्रिका चन्द्रलतिका जु दोऊ परम सुजान ।
कुन्दनयनी समन्दिरा निज गन में पहिचान ॥२१॥
चित्रा चित्त में बसौ सदा केसर रङ्ग अङ्ग जाकी ।
कांचन वसन जु पहिरै चित्र सेवा हैं ताकी ॥२२॥
ऐसे चित्राजी कौ है मेरे कोटि प्रनाम ।
निज दासी करि परिकर में राखो हो अविराम ॥२३॥

रसालिका तिलकिनी है निजगण में परवीण ।
सुगन्धनि सैरसैनी रहै सेवा में लीन ॥ २४ ॥
एमिलिका कामनगरी सब सखिन अति प्यारी ।
नागरी नागवैनी मैं जाऊँ बलिहारी ॥ २५ ॥
तुङ्गविद्याजी को अंग, अरूनता अति भारि ।
चंदन रंग की ओढ़ै, सदा सुहावनि सारि ॥ २६ ॥
वीन लै पिय प्यारी कौ निरन्तर राग सुनावै ।
वड़भागी जो तुङ्गविदया के विमल जस गावै ॥२७॥
मञ्जुमेधा रु सुमधुरा निज गण में विराजै ।
मंजुविद्या सुमध्या जु निज परिकर में छाजै ॥२८॥
मधुरनैनी तनुमध्य है, मधु स्पन्दी कौ प्रनाम ।
वरांगदा गुनचूड़ा गावै सुनौ मनोहर तान ॥२६॥
सुमिरौ इन्दुलेखा इन्द्रमुखिन की है अति प्यारो ।
हरिताल सम निज अङ्गहि पाँखड़ि अनार सी सारी ॥३०
आभूषण सेवाहि में जु है बड़ी प्रवीन ।
इन्दुलेखा के चरण में रहौ सदा मन लीन ॥३१॥
तुङ्ग विद्या रसतुङ्गा रस की जानै वात ।
रङ्गवाटी सुसङ्गति इनतें सब सुख पात ॥३२॥
चित्रलेखा विचित्रा मिलि इह दोऊ वढ़ावैं मोद ।
मन्दालसा जु मन्दिरा गावैं वेद प्रमोद ॥३३॥
श्री रङ्गदेवी की सम सखिन में नहिं कोहि ।
कमल किञ्जल्क अङ्ग शोभा पिय प्यारी मन मोहि ॥३४॥
जवा पुष्प रङ्ग वसन दर्पन सेवा नित्त ।
प्रेमानन्द में छके रहैं जुगल रूप निज चित्त ॥ ३५ ॥
ऐसी रंग देवीजु को करौ निसि दिन ध्यान ।
नित्त चाहि ले व्रजरस उपासना की ग्यान ॥३६॥

कलकंठी शशिकला रहैं पिय प्यारी के पास।
मधुरा कमला देवी जु पूरौ मन की आस ॥३७॥
कन्दर्परूपा इन्दुरा कर जोड़ि करौ प्रणाम।
प्रेममंजु कामलता देहु वृन्दाबन निज धाम ॥३८॥
सुदेवी रंगदेवी की रूप समान करि जानि।
उमर एक दुहून की इह मन निश्चै ठानि ॥३९॥
प्याय जल आसन दै स्यामा स्याम के पास।
उहै सुदेवी कृपा करौ लहौं वृन्दावन वास ॥४०॥
कावेरी चारु कवरा है दोऊ परम दयाल।
सुकेसी मंजुकेसी की सुनौ वचन रसाल ॥४१॥
हारहीरा महाहीरा दास्य में है बड़ी प्रवीन।
मनोहरि हार कण्ठी सेवा में नित लीन ॥४२॥
परिकर सह अष्ट सखिन की नैक कृपा जौ पाऊ।
प्रिय नम्र सखीन की जस रसना में गाऊँ ॥४३॥
गुसाईं सनातन प्रकट भे लवंग मंजरी जाय।
निज नाम है करि रसना निसिदिन (बीतौ) जाय ॥४४॥
विजली सम निज अंग है हरिताल रंग की वास।
तेर वरष उमर तेरह दिन, रहै प्यारी के पास ॥४५॥
अरुणवसन पहिरै सदा जब सेवा में लीन।
पिय प्यारी रिझावें नित है महा चतुर प्रवीन ॥४६॥
रूप गुसाईं रूप के प्रकट भए रस राज।
रूप मंजरी नाम है सरावै सखी समाज ॥४७॥
हरिताल केसी जाकी निज अंग अरु रूप।
अनार पाँखरी के रँग, पहिरे वसन अनूप ॥४८॥
नव दिवस तेरह वरस उम्र है नित जाकि।
पानदान हाथ लिये सदा सेवा है ताकि ॥४९॥

संसार स्वाद सौं रहै नित निषट है जु उदासि ।
श्री लाड़िलीलाल जू के निरंतर करै खवासि ॥५०॥
श्रीजुत जीव गुसाईं जु मन में सर्वदा ध्याऊँ ।
विलास मंजरी जानि कै कृपा तिनकि मनाऊँ ॥५१॥
कुमकुंम कैसी वरण है नील वसन परिधान ।
तेरा बरस आठ दिनरु जानि वयस अनुमान ॥५२॥
बहुविधि गंध चंदन लै सेवा करै जु प्रीति ।
जुगल रूप निरखै सदा प्रेमानन्द निह चीत ॥५३॥
श्रीकृष्णदास गोसाईं जिनकौ है सुभ नाम ।
कनक मंजरी सिद्धनाम तिनकौ है सदा जान ॥५४॥
पीत केतकी निज अङ्ग है तारावलि वसन अनूप ।
तेरा वरस सात दिवस देखिये अदभुत रूप ॥५५॥
पंखा सेवा में रुचि है जाकी अति जु भारी ।
स्यामास्याम रीझि करि कबहुँ करत न न्यारी ॥५६॥
नन्दकुमार गुसाईं जु है जिनकौ निजनाम ।
नवीन मंजरी प्रगट है पहिरै वसन जु स्याम ॥५७॥
मध्य कैशोर वयस है अंग अनूपम पीत ।
पलंक सेवा में है रुचि बड़ोहि मन में प्रीति ॥५८॥
ऐसी नवीन मंजरी जू की मेरे कोटि प्रणाम ।
सदा रसना रटिवौ करौ नवीन मंजरी नाम ॥५९॥
श्री ब्रजकुमार गुसाईं कौ वंदन करौं कर जोडि ।
विहार मंजरी सिद्ध नाम रसना रटि जू थोरि ॥६०॥
कमल कैसी निज अङ्ग है अद्भुत कांति निहार ।
शिखिपिच्छ कैसे वसन है भूसन सेवा निरधार ॥६१॥
षट दिन तेरा वरस में रहै ऊमरि अभंग ।
ऐसे विहार मंजरी में वस्यौ जु मन में रंग ॥६२॥

श्रीलाला वृन्दावन जू ध्याइयै मन में नित।
श्री विकास मंजरी गाइयै सिद्ध नाम है चित्त ॥६३॥
कुंदन केसी बरन है वसन नीलकंठ तूल।
तेरा बरस दिन पाँचहि चँवर सेवा अनुकूल ॥६४॥
श्री गोपीरमण गुसाईं सदा रसना गाऊँ।
श्री गुण मंजरी सिद्ध नाम निरंतर ध्याऊँ ॥६५॥
कमल किंजल्क सी तनद्युति वसन जवा पुष्प रंग।
तेरा वरस चार दिन वसन सेवा करै अभंग ॥६६॥
श्री ब्रजलाल गुसाईं नाम करि इहै जानि।
विपिन मञ्जरी सिद्ध नाम मन में सदा जु आनि ॥६७॥
चंपकली कैसी है शोभा है निज अङ्ग।
अरु नव जलद वसन सखियन के हैं संग ॥६८॥
तेरा वरष दिन तीनहि जिनकी वयस प्रमान।
माला दै सेवा करै पिय प्यारी मन जानि ॥६९॥
ये विपिन मंजरी की करिलै निसि दिन ध्यान।
श्रवण सुनौं वन मंजरी रसना निरन्तर गान ॥७०॥
श्री गुसाईं नवलाल हैं महा चतुर सुजान।
ललित मंजरी नाम हैं अंग हेम केतकि समान ॥७१॥
सुरंग सारी पहिरैं जु गावै मनोहर तान।
तेरा वरष तीन दिन हैं ऊमर की अनुमान ॥७२॥
सेवा संगीत विद्या की वीन लै निसिदिन गाय।
जुगल रूप निरखै सदा स्यामा स्याम रिझाय ॥७३॥
ललित मंजरी कृपा करौ निरखौ मेरी ओर।
दीन हीन द्वारे परै नाहिं मोहि कहुँ ठौर ॥७४॥
श्री गोविन्दलाल गुसाईं जिनके है शुभ नाम।
गंध मंजरी सिद्ध नाम हैं तिनके करूँ प्रनाम ॥७५॥

सोनजुही सी बरण हैं गहरे सोहनि रंग।
नील जलद सी वसन सदा पहरे हैं निज अंग ॥७६॥
तेरा वरस हैं तीन दिन ऊमर कौ परमान।
पिकदानी लै सेवा करै रीझै चतुर सुजान ॥७७॥
गंध मंजरी की मैं तौ जनम जनम की दास।
इह आशा पूरी करौ सदा लहौं वृन्दावन वास ॥७८॥
इह मंजरी कहैं और मंजरी अपरम्पार।
गुण मंजरी रवि मंजरी रस मंजरी निरधार ॥७९॥
इह सब मध्य किशोर में पहिरै वसन अनूप।
कंचन सी निज अंग है निरखौ अद्भुत रूप ॥८०॥
सेवा करै जु सवनि मिलि समय समय रुचि जान।
को कवि ऐसे जगत में ताकौ करै वखान ॥८१॥

इति श्रीभजनपद्धतिग्रन्थे सखी नाम
वर्णनं नाम पंचम विभाग—

सखी नर्म सखी कहौं जथा बुद्धि है मोर।
यह परिकर अनंत हैं काहू न पाये ओर ॥१॥
साधक भजन हितहि कहौं प्रात समय की बात।
जाहि सुनत रसिकन के जु तन मन सवै सिरात ॥२॥
राति वस वीति गई जव आनि भई प्रभात।
लगे मोर शोर करत शुक सारि मनोहर बात ॥३॥
चिड़िया चुहूँ चुहूँ करै बोलैं कोइल रसाल।
वृंदा सखी सखि वृंद लै जगाएं मदन गोपाल ॥४॥
कोऊ गावैं गीत बजावैं चंग उपंग अरु बीन।
कोऊ कहै विरुदावलि रहैं प्रेम में भीन ॥५॥
रन्द्र जालि कै निरखि सदा पौढ़े जुगल स्वरूप।
नील कमल में पीत कमल उरझे मनोहर रूप ॥६॥

कान परी सखीन के शब्द पंछिछुत की शोर।
लाड़िलीं जब जागी परी खुली नैंन की ओर ॥७॥
प्यारे कौं जगावै प्यारी फूँक दै नैनन मांहि।
अंग मोरत उठे जु हरि प्रिया कौ मुख चाहि ॥८॥
दोउ उठि बैठे सेज में शोभा बढ़ी अनूप।
खोलि किवार गई सखी सब निरखै जुगल स्वरूप ॥९॥
आनन्द सों सेवा करैं पावै सुखनि अपार।
प्रेमानन्द में छक्यौ रहै नाहिं जु आन विचार ॥१०॥
सैया सौं उठि ठाड़े भये दोऊ स्यामारु स्याम।
बिछुरन दुःख व्यापि अति चले निज निज धाम ॥११॥
नाना विधि जतन करि ल्याये भवन के माहिं।
निसि के वसन उतारि कै कीनी दाँतनि चाहि ॥१२॥
बैठे रतन कि चौकि पर शोभाई अति भारी।
सखी सब ल्याई भरी निर्मल जल की झारि ॥१३॥
अति सुगंधित दांतुन लै दियो सखिन संवारि।
आनंद सों दाँतन करैं श्री वृषभान कुंवारि ॥१४॥
रदन चंद अरु नख चंद ये मिलि भये इक ठौर।
चन्द्रमणि की होद तब उमड़ि चले चहुँ ओर ॥१५॥
सुगन्ध जल सों स्नान करि, पहिरे वसनहिं जान।
बैठारे ल्याय आसन परि करकै बहु सनमान ॥१६॥
सोलह सिंगार करैं प्रीति सौ खंडित नारि जू एक।
सो सिंगार बरनन करौं, मन में राखि विवेक ॥१७॥
वैनी गूंथैं कोऊ सखी, पहिरावैं वसन नील।
वन्धि लाल सुत की वहुचा वैठें सुहास वरुन सील ॥१८॥
करण फूल कानन राजें, वंदि वेना लगे अनूप।
कवरी में फूलनि गुही, चन्दन चर्च्चित रूप ॥१९॥

ताम्बूल रेख अधर सोहै घूंघर वारौ केश।
चिबुक लगै सुहावनौ, कजरारि नैन विशेष ॥२०॥
मृग पत्रिका उर में राजै, सुन्दर तिलक बनाय।
महावरि रंग सोहै सदा, भानुकुंवरि के पाय ॥२१॥
नील वसन सुहावनौ, नव घन की सी राजि।
बिजुरी सी निज अंग, ताके मध्य विराजि ॥२२॥
पूरणचंद मुखचंद है करिलै मन में ध्यान।
कस्तूरी तिलक मृगांक सम करिलै चित में ज्ञान ॥२३॥
भौहैं कमान मनमथ कौ, कटाक्ष है तीक्ष्ण तीर।
आय लगी मन मोहन कौ, ह्वै रह्यौ निपट अधीर ॥२४॥
चंचल अलक सुहावनौ, नैननि काजर रेखि।
कीर चौंच सम नासिका, तामें मुक्ताफल देखि ॥२५॥
कुन्दकली सी दन्त हैं, झलकत चंद समान।
कर्नफूल सोभित महा, चिवुक मनोहर जानि ॥२६॥
रतन जड़ाऊ हार मोतिन की गरै बिराजै सुन्दर।
बाजूबन्ध सुहावनौ झवा, राजैं मनोहर ॥२७॥
इन्द्रमणिन के चूड वनि सोहैं हैं अति भारि।
दस अंगुरिन में मुद्रिका पहरैं राधा प्यारी ॥२८॥
अंगिया सोहै उरोज में कसिकै तनी सवारि।
जामैं राजत अनुपम चन्द्रसैनी कौ हार ॥२९॥
नीवी वंध कटी में जु, सौहैं अति भारि।
छुद्र घंटिका सबद लगै, सखियन ही कौं प्यारि ॥३०॥
चरण महावर रचि रहे अरु नूपुर झनकार।
अनवट लगे घूंघरू बिछुवा सब उदार ॥३१॥
अङ्ग अङ्ग सोभित महा, भूषन नख सिख जानि।
नव दुलहिन श्री राधिका, सखियन मध्य मानि ॥३२॥

बात करैं नाना विधहि, उपजै रंग अपार ।
जसुमति पठई सखी ह्वै, आय पहुँची तिहि वार ॥३३॥
सब सखी मिलि आदर कियो बैठी प्यारी पास ।
भली भई आईं तुम, पूजौ मन की आस ॥३४॥
तब बोली प्रसन्न ह्वै, सुनौं सब सखी समाज ।
आई बुलावन कीरत कुंवरि, चली रसोई काज ॥३५॥
तब सब मिलि उठि चली, ब्रजरानी के धाम ।
गुरुजन कौं वंदन करि, जसुमति चरण प्रणाम ॥३६॥
ब्रजरानी असीस दई, लई गोद उठाय ।
बढ़ै सुहाग नित ही नित, कछु कह्यौ नहिं जाय ॥३७॥
ब्रजरानी आज्ञा दई, लई मस्तक में धारि ।
तब रसोई गृह में गई, करैं नाना उपचार ॥३८॥
इह विधि परिचर्या करैं, रहैं निरन्तर लीन ।
गोविन्द गुण गावैं सदा, है सब चतुर प्रवीन ॥
अब कहुं प्रात समय जो, लीला करैं घनश्याम ।
कुंज भवन ते निकसि कै, आनि पहुँचे निज धाम ॥४०॥
रतन चौकि पर बैठे हरि मिले सखा सब आय ।
सुगन्ध जल सौं दाँतन करै, कछु मधु सौ वतराय ॥४१॥
हास्य करैं नाना विधि जु, कोऊ अन्त नहि पाय ।
तब दोहिनी लिवाय कै, खिरक में हरि जाय ॥४२॥
ठाड़े ह्वै दुहावें दूध, दोहै अपनो हाथ ।
पाछे दूध पहुँचे सब, जहां रहे यशोदा मात ॥४३॥
तब निज गृह आवें हरि, स्नान करावै दास ।
तब अंग पौछिकैं पहिरावे, पीत मनोहर बास ॥४४
आसन में बैठे हरि, बनायें तिलक अनूप ।
सन्ध्या वन्दन आदि करि, निरखै आप स्वरूप ॥४५
तब आभूषण प्रीति करि, सब दास ले आवैं ।
अति आनन्द सौ निज अंग में लै लै पहिरावैं ॥४६॥

मोर मुकुट सीस सोहै, कुण्डल की छवि न्यारी ।
घुँघर वारि अलकैं झलकैं, नासा मुक्ता छवि भारि ॥४७॥
भाल तिल सुन्दर सोहै, केसरि खोरि बनाय ।
मुखचन्द अति सुहावनौं, मनमथ देखि लजाय ।॥४८॥
कंठ सौहै कौस्तुभ मणि, उर मोतिन की माल ।
चौकी चमकै सुहावनी, जामें अनुपम लाल ॥४९॥
बाजूबंद मनोहर सोहै, कर में कड़ा अनूप ।
कटि किंकिणी सुन्दर बाजै, निरखौ श्यामस्वरूप ॥५०॥
नूपुर सोहै चरण में, झाझन की झनकार ।
मनोहर राजत घूँघरू, सबद करै झनकार ॥५१॥
इह विधि शृंगार करि हरि बैठे आसन माहि ।
सखागन सब सङ्ग लै, पहुंचे हलधर आय ॥५२॥
हरि तब उठि ठाड़े भये, बल कों करें प्रणाम ।
दुहुँ परस्पर मिले तब, बैठे एकहि ठाम ॥५३॥
सखा मण्डलो मध्य विराजत, हलधर नन्दकुमार ।
सुबल मधुमंगल आदि लै, सोहै सखा अपार ।॥५४॥
हास्य रस में मधुमंगल, है जु परम प्रवीण ।
उज्ज्वल सुबल शृंगार में, रहै निरन्तर लीन ।॥५५॥
श्रीदामा सख्य रस में, है जु परम सुजान ।
केलि करै नाना विधि ब्रजजन कहै जु प्राण ॥५६॥
सब सखा मिलि चले तब, ब्रजरानी के पास ।
दुरतें देखि पुत्रन कौ, मन में भयौ उल्लास ॥५७॥
कृष्ण अरु बलदेव दुहु, आय कियौ प्रनाम ।
ब्रजरानी उठि मिलि तब, कंठ लग्यौ घनस्याम ॥५८॥
विप्रत्रियान कों प्रनाम करि, परे रोहिनी पाय ।
प्रेम सौं दोऊ भ्रात कौं, लई अंक लगाय ॥ ५९
पूरणमा वृंदा सहित, आई मन में हुलास ।
कृष्ण रूप निरखि चली, ब्रजरानी के पास ॥ ६० ॥

आनि पहुँची सभा मध्य, आनन्द बढ्यौ अपार ।
ब्रजरानी वंदन करै, लियै सबै परिवार ॥ ६१ ॥
ता समैं दान करैं हरि, नैकहु कह्यौ न जात ।
कंचन सहित घृत पात्र में, देति विप्रन को हाथ ॥ ६२ ॥
गाभी सुवर्ण आदि लै, करै नाना विधि दान ।
पहिरावनि पहिरावै, बहिनी कौ है सनमान ॥ ६३ ॥
ब्रजरानी पै आज्ञा लै, पाक साला में जाय ।
पंगति करि बैठे सब सखा निकट बुलाय ॥ ६४ ॥
झारी भरि लाई ललिता, धर्‍यो जु बायें ओर ।
आगे थाल सुहावनौं, झलकत कंचन कोर ॥ ६५ ॥
प्यारी थाल सजायकैं, दियो रोहिणी हाथ ।
तब रोहिणी पारस करैं, जिमावैं यशोदा मात ॥ ६६ ॥
प्रथम अल्प पारस करैं, व्यंजन धरे अपार ।
खीर सिखरिनी चलावै, तब जीमें नंदकुमार ॥ ६७ ॥
सखा सब मिलि जीमें, तब सरावैं बारम्बार ।
मधु मंगल तब हास्य रस, कीनौ अति विस्तार ॥ ६८ ॥
रामकृष्ण जीमें दोऊ, जिमावै यशोदा मात ।
सुगंध जल आचमन करि, बीरी सब मिलि खात ॥६९॥
ललिता बीरी बनाय करि, कृष्ण निकट पठाय ।
बीरी चतुराई देखि, मधु मंगल मृदु मुसकाय ॥ ७० ॥
कृष्ण मधु के कान में, कही अनुपम बात ।
इहां कछु कहो मति, बैठे गुरजन हलधर भ्रात ॥ ७१ ॥
तो न कहौं मैं तेरे सब चतुराई ।
जो कछु देवो मोहि, तुम कुंवर कन्हाई ॥ ७२ ॥
इह विधि नाना आनंद सौं, बात सभी बतराय ।
जसुमती प्रियावृंद कौं, प्रीति सौं दई जिमाय ॥ ७३
जसुमति हरि कौ श्रृङ्गार करि, बनावै नटवर वेष ।
जूड़ा मनोहर बाँधि तब, घूंघर वारे केश ॥ ७४ ॥

भाँति भाँति के रतन सौ, जूड़ा अनूपम सोहै ।
अलक तिलक सुधारि कैं, नर नारिनु मन मोहै ॥ ७५ ॥

चिवुक चन्द सी चमक रही, डिठौना मुख के माँझ ।
अंग अंग भूषण सजे, सजी मनोहर साज ॥ ७६ ॥

फेंट में उरसै बाँसुरी, लाल छरी लै हाथ ।
बलदाऊ कौं बुलाय कै, सोपैं यशोदा मात ॥ ७७ ॥

ग्रह में रच्छा मैं करी, वन में राखि तु भ्रात ।
निपट भोलौ गुपाल है, जानी न एकौ बात ॥ ७८

जल थल सों रच्छा करि, रहियो संगहि संग ।
वन में सुने रहे निरन्तर, विषधर विषम भुजंग ॥ ७९ ॥

एहि विधि नाना शंका करि, कहि न सकत कछु वैन ।
रच्छा-बन्धन मन्त्र पढ़ि, नीर भरि भरि डारै नैंन ॥ ८०

तब एक सखा कही अब, मति करौ कोऊ देर ।
गाय खिरक अरबरात है, भई वन की बेर ॥ ८१ ॥

सब मिलि प्रणाम करि, चले नंदराज के ठाँव ।
बन चलिवे को आज्ञा लिये, किये बहुत परनाम ॥८२॥

व्रजराज तब हिले मिले, करि नाना विधि बात ।
कृष्ण बल कौं आज्ञा दिये, आये खरक लौं साथ ॥ ८३॥

गो चारण को चले हरि, बजावे बैन घनघोर ।
आनंद सिंधु उमड़ि चल्यौ, व्रज के ही चहुँ ओर ॥८४॥

आगे धेनु करि लिये, सखा मण्डली पाछें ।
कोऊ सखा नाचत चले, सुंदर काछिनी काछें ॥ ८५ ॥

व्रज की गली अति सांकरी, जुरे सखान की भीर ।
ठठकि ठठकि चलै हरि, संग लिये बलवीर ॥ ८६ ॥

बाँसुरी बजावें जु हरि, भयौ सबद रसाल ।
व्रजनारी अटा चढ़ि निरखैं मदन गोपाल ॥ ८७ ॥

इह विधि प्रात समय करैं, लीला श्री हरिराय ।
संक्षेप सौं बरन्यौ कछु, भजन पद्धति माहि ॥ ८८ ॥
इति श्री भजन पद्धत्यां प्रातलीला वर्णनं

षष्ठ विभाग

हास परिहास करैं जब, चलैं चलि वन में धेनु ।
दिसा दसों पावन करें, उड़ै चरण की रेणु ॥१॥
नाना विधि क्रीड़ा करै, नित वृंदावन मांहि ।
सखा सबन संग लिये, मोहन गाय चरांहि ॥२॥
जब गौधन तृन लोभ, में दूर पहुंचे जाय ।
अधर में मुरली धरे, लै लै नाम बुलाय ॥३॥
गंगा यमुना अरु काजरि, धूमरि पीयरि गाय ।
श्याम अंग के सुगंध लैत, तबही पहूँचे आय ॥४॥
पिसंगी मणिकस्तनी, श्याम कौं अति प्यारी ।
प्रनत श्रृंगी पित नयनी, ह्वै आवै सबतें न्यारी ॥५॥
मृदंगमुखी धूमलि की, प्रीति कही नहीं जात ।
जहां देखें श्री कृष्ण कौं, तहां भाजी हीं जात ॥६॥
वंसीप्रिये हंसिनी, जब सुनै सबद रसाल ।
तबहिं पहुँची आनिकै, निरखे मदन गोपाल ॥७॥
सुरभी सब देखि हरि, आनिहि अपने पास ।
जमुना जल प्यावें तब, लिये सखा सब दास ॥८॥
पाछें जल बिहार करैं, जमुना जल के मांहि ।
ता समै छाक पहुँचि, आय सखा संग ले खाहि ॥९॥
बन भोजन की शोभा, कछु कही नहिं जाय ।
चतुरानन देखि विस्मय भये, और लोक की नाय ॥१०॥
कोऊ सखा सज्या रचै, लावैं पत्र अरु फूल ।
उपरि छाया द्रुमन की, निकट जमुना कूल ॥११॥
त्रिविध पवन आवें जहां, सीतल सुगंध रु धीर ।
आय पौढ़े जुवराज कृष्ण, चहुं ओर सखन की भीर ॥१२

कोऊ चरण सेवा करै, बिजना कोऊ ढुराय।
कोऊ छड़ी लै ठाढ़ौ रहै, कोउ विरदावलि गाय ॥१३॥
राज उपचार लीला करें, श्रीब्रजराजकुंवार।
महा आनन्द उपजै सदा, को कवि पावें पार ॥१४॥
और अनेक लीला करैं, वन में चतुर सुजान।
अधर में मुरली धरैं, गावैं मनोहर तान ॥१५॥
जा मुरली धुनि सुनि, ब्रजदेवी भई अधीर।
घर बार सब भूलि गई, उपजी मन में पीर ॥१६॥
तब नाना उपहार लियें, पहुँची वन के मांहि।
कालीदह के निकट, ठाढ़ी हरि मुख कौ चाहि ॥१७॥
हरि तब मिस बनाय कैं, आये वाही ठौर।
प्यारी बीच लिये ठाढ़ी, निरखै सखीन के कौर ॥१८॥
तब कृष्ण आनंद ह्वै, मिले श्यामा कौं आय।
तब झूला डारे तहां, गीत मनोहर गाय ॥१९॥
सरस हिंडोरा जु बन्यौ शोभित कंचन खंभ।
नाना विधि रतन जटित, निरखत लगै अचम्भ ॥२०॥
चारु डांडी सरल सुन्दर निरखि अनंग जु लाजै।
पटुली पिरोजा लगी अनुपम, काम जड़ाऊ साजै ॥२१
लाला फौंदा लटकै अद्भुत शोभित नाना रंग।
सखी मिलि झुलावै जब उपजै प्रेम तरंग ॥२२॥
मरुवा में मानिक जड़ी, चुनी लगी अति भारी।
हीरा चमकत चंद से, रचि पचि सखी सवारी ॥२३॥
उपरि कलस सुहावनौ, शोभा कहि नहि जाय।
चहुँ ओर तें झुकि रही, कलपतरुन की छांह ॥२४॥
नवल हिंडोरा सुहावनौ, जुरे सखी समाज।
नव मोहन राधिका राजैं, पहिरें नई-नई साज ॥२५॥
नवल सखी झुलावें, तब उपजै नव-नव रंग।
श्यामा श्याम दोऊ मिलि, ह्वै गए एक हिं अंग ॥२६॥

जबहि हिंडोरा झमकि सौं निकट जमुना कें जाय।
तब प्यारी डर मानिकें स्याम अंग लपटाय ॥ २७ ॥
अद्भुत शोभा होय तब, कछु कह्यौ नहिं जाय।
ज्यों दामिनि नव घनहि में, मानौ जाय दुराय ॥२८॥
दोऊ रूप सुहावनौ, दुहुन कै एकई मेलि।
नव तमाल सौं लपटि रही, ज्यों कंचन की बेलि ॥ २९ ॥
इह विधि झूलै दोऊ, रसिकन के सिरमौर।
दोऊ ओर सोभित महा, नर्म सखिन के कोर ॥ ३०॥
ललिता झुलावै दाहिनें, संग लिये मंजरी रूप।
झोटा देत विशाखा जु, लवंग मजरी अनूप ॥ ३१ ॥
पुनि दाहिने चित्रा जु, चम्पकलता को जानि।
बायें ओर रंग देवि, सुदेवी कौ पहिचानि ॥ ३२ ॥
तुंग विद्या सनमुख गावें, भाँति भाँति की तान।
सग सब सखी बजावे, है महागुनन निधान ॥ ३३ ॥
अद्भुत बाजा बजे जहाँ मृदंग रवाव अरु बीन।
कोऊ चंग उपंग बजावै, ह्वै प्रेम में लीन ॥ ३४ ॥
जब तुंगविद्या सुधारि कैं, तीन ग्राम कौं लेत।
छहौं राग छत्तीस रागिनी सरस सुरन तब देत ॥ ३५ ॥
राग निज रूप धरि राजें भूषन बसन अनूप।
गावें मनोहर ताननि निरखें जुगल स्वरूप ॥ ३६ ॥
मुरज मुहचंग के सबद रही घनघोर।
बाँसुरी वेणु कौ सुर छाय गयौ चहुँ ओर ॥ ३७ ॥
सितार तम्बूरा कोऊ, सखी अनूप बजावैं।
गन्धर्व कला में प्रवीन अति, स्यामा स्याम सरावैं ॥३८
द्रुमलता सब रीझि रही, बड़ी प्रीति अपार।
परत पराग सुहावनौ, अरु मकरंद फुहार ॥३९॥
मधुर मधुर बाजा बजैं, गावै न्यारी न्यारी तान।
निज कंठहार उतारि कै, देत पिय प्यारी जान ॥ ४० ॥

चोषठि कला में प्रवीन हैं, दोऊ बड़े रिझवार ।
वीन लै बजावै गावै, मोहि लिए नरनारि ॥ ४१ ॥
इह विधि झूलैंहि सदा, दौऊ रसिक सुजान ।
अनेक सुख उपजै जहाँ, को कवि करै बखान ॥ ४२ ॥
सब वासर बीति गई, रहि जब थोड़ौ आय ।
हिलि मिलि प्रिया सब, निज भवन में जाय ॥ ४३ ॥
हरि मिले सब सखन सौं, बुलाय लई सब धेनु ।
निज भवन कैं सनमुख करै, बजावैं अद्भुत वैंन ॥ ४४ ॥
फूलनि के सिंगार करे, पहिरावै बनमाल ।
आगे धेनु चलावैं, पाछे चलैं नंदलाल ॥ ४५ ॥
काच सखा पहिरावै, पचरंग थाक के हार ।
चंपा चमेली सोहै और, वकुल कुंद मंदार ॥ ४६ ॥
कस्व गुंजा भूषण पहिरें, शोभा भई अपार ।
हुङ्कार सबद करि गौ चले पाछें नंदकुमार ॥ ४७ ॥
मंदगती सुरभी चलैं, मधुर बजै तब बैंन ।
त्रिलोकी पावन करें, उड़े जु खुर की रेंन ॥ ४८ ॥
ब्रजरानी आरती लिए रहै द्वार में ठाड़ी ।
कब आवै मेरे पुत्र लाड़िलो बनवारी ॥ ४६
अटा चढ़िकैं निरखैं, सब ब्रज के हैं नरनारि ।
बेंन सबद सुनि रहे, मारग माहि निहारि ॥ ५० ॥
आवैं हरि आनन्द सौं, लिये सहचरि बृंद ।
अचरज शोभा ह्वै रही, ज्यौं तारा में चंद ॥ ५१ ॥
लाल छड़ि फिरावत आवैं, गावें गीत अनूप ।
जाली ह्वै निरखै सखी, सुन्दर प्यारे कौ रूप ॥ ५२ ॥
ठठकि ठठकि आवै हरि, ब्रज वीथिन भई भीर ।
कौऊ सखा नाचत चलैं, सरावैं आप बलवीर ॥ ५३ ॥
इहविधि पहुँचे आय के बनवारी द्वै भाई ।
ब्रजरानी सौं आय मिले, खिरक पहुँचाये गाय ॥ ५४ ॥

आरती उतारी प्रीतिकरि, कीनौं बहुत न्यौछारि।
घर में लै गई आनंद सौं, वन की सिंगार उतारि ॥५५
अंग पोछैं अचरा करि, कछु मिष्टान्न खवाय।
वन की वात वूझैं सब, वासर की तपत वुझाय ॥५६
उबटन करि नह्हाय पहिराय धोवति लाल।
चन्दन की खौरि करि, सोहै मदन गोपाल ॥५७॥
जूरा के वाल खुलि रहे, चूरा कर में सोहि।
कौधनी कमर में सोहि, देखि मनमथ लाजोंहि ॥५८॥
पावरी पाव में दियें, सखा वृंद लै संग।
पदाय सों चलै हरि, उमड़ी रूप तरंग ॥५९॥
खिरक जाय ठाढ़े वुलावैं, गायन कौ लै नाम।
दोहैं दूध आनन्द सौं, दोहनी लैं घनश्याम ॥६०॥
सब दूध दुहाय पठाय, निज भवन के मांहि।
सखा गन सब संग लिये, वैठे वैठक जाहि ॥६१॥

इइ श्री भजनपद्धतिग्रंथे गोष्ठवर्णनं सप्तम विभागः

नाना विधि वातें करें, करै हास परिहास।
भोजन काज वुलावन आये, वाही समै निज दास ॥१॥
तब उठि ठाढे भये, कीये सखन विदाय।
दासगण सब संग लिये, पाक भवन में जाय ॥२
सब मिलि जीमैं तव, जुर्‍यौं बहुत समाज।
रोहिणी तव पारस करैं, परजन्य गोप के माझ ॥३
नंद उपनन्द राजै तहां, सुनंद अरु अनुनन्द।
मध्य में राजै गोविंद, ज्यौं पौर्णमासि कौ चंद ॥४
आनन्द करि जीमै सब, बैठे सभा में जाय।
सब मिलि वीरी खाय कै, लियौ श्रीकृष्ण वुलाय ॥५
विप्र गण आवैं तब, कहै पुराण इतिहास।
नृत्तकारी तव नृत्त करें भरें नाना विधि हास ॥६

कृष्ण बलराम सौ नित्त, परिजन्य कहैं रसबात ।
दोऊ भ्रात बोले जब, फूले अंग न मात ॥७

बहुत राति बीतै जब, चले गृह बृजराज ।
श्री कृष्ण पाछे चले, मिलि सखी मारग माझ ॥८

मंद मुसिक्याय बात कही, सखो है चतुर सुजान ।
तुम बिन छिन छिन प्यारि की, जुग बीतै कोटि समान ॥९

विलम्ब न करो हरि अब, चलौ जु याही बार ।
ठाढ़ी ह्वै निरखै प्यारी, आय निकुंज के द्वार ॥१०

तुम बहुरंगी हो महा, कोउ अन्त नहिं पाय ।
कौतुक सब छोडि देव, चलौ सोहन मदिर मांहि ॥११

तब कृष्ण पहुँचे जाय, मोहन मंदिर माझ ।
देखि उठि ठाढ़ी भई, तब सब सखी समाज ॥१२

तब ललिता ठाडी ह्वै, कहि बात अति प्यारी ।
मंदिर आय पहुँचे हरि, करौ चलिबे की त्यारी ॥१३

वाही समै विशाखा करि, ल्याई बसन सब त्यारि ।
पहिरावैं निज हाथ करि, श्री वृषभान कुंवारि ॥१४

ता समै मृग पत्रिका दीनी, प्रीति सौ चित्रा बनाय ।
चंपक लता चँवर करैं, मंद मंद मुसिक्याइ ॥१५

सुदेवी बैनी गुहैं रंग, देवी दर्पन दिखाइ ।
लवंग मंजरी झारी लियैं, पहुँची तब ही आय ॥१६

पान दान हाथ लीयें, सोहै मंजरी रूप ।
बात करै रति मंजरी है गुन मंजरि अनूप ॥१७

विलास मंजरी सुगंध लियै, रस मंजरी है संग ।
चौकी पर बैठारि कै, लगावैं प्यारि के अंग ॥१८

विजन डुराय कनक मंजरि, नवीन मंजरी पास ।
भूषण विहार मंजरि रचै, शैय्या मंजरि विकास ॥१९

गुण मंजरी नैनन में काजर ले लगावैं ।
विपिन-मंजरी पंचरंग, हार लै पहिरावैं ॥२०

रतन मंजरी प्यारी के, चरण महावर लाय।
पिक दान लिये गँध मंजरी, निकट हूँ पहूँचाय ॥२१
और सब सखी मिलि कीने, अपने अपने काम।
प्यारी कों वे लै चलीं, मिलावन घनस्याम ॥२२
हंस गमिनि पिय मिलि चलीं, राखि भुज में भुज वाम।
जब धरि चरण सुधारि कैं, देखि मोहि तब काम ॥२३
सोलौं सिंगार सोभित अरु, राजै भुषन अनूप।
जुध्य करन चल्यौं मनौं, आप मनमथ भूप ॥२४
सखि समाज सब सैन्य है, निज अंग के माह।
मन तुरंग में चढ़ि चली, नूपुर माझ जगाह ॥२५
भोंह जुग कमान हैं, कटाच्छन तीछ्न तीर।
निज निज मिसल में चली, इक इक अनुपम वीर ॥२६
इहि विधि पहुचाई प्यारी, मोहन मन्दिर जाइ।
मिले हरि आनन्द सौ, वैठि आसन माहि ॥२७
तब जो जो सोभा भई, कछु कही नहिं जाय।
इन्द्रमनि के पर्वत सौ, मिले कंचन गिरि आय ॥२८
परसपर वातें करें, उपजै अनंद अपार।
सखी सब चरचा करैं, दुहु मन जानि विचार ॥२६
ललिता वोरी देत तब, चम्पक चवर डुलाय।
तुंगविद्या वीन लै, राग मनोहर गाय ॥३०
नाना विध वाजे वजैं, ह्वै रह्यौ सवद रसाल।
कोऊ सखी नृत्य करैं, राखै अनूपम ताल ॥३१
नाना विलास ह्वै है तब, निज आंगन के माहि।
जो सुख सब उपजै यहाँ, नैक वरन्यौ नहिं जाय ॥३२
तब ललिता कटोरा भरि, दीनी दूध सौं ल्याइ।
पीयें हरि आनंद सौं, प्रिया पाछे पियाइ ॥३३
अरस परस पीवै दोउ, मंद मंद मुसिकाय।
ललित मंजरि शोभा निरखि, वार वार वलि जाय ॥३४

आचमन करैं दुहुँ मिलि, ललिता मूख धुवाय ।
नाना सुगंध मिश्रिता वीरा, पिय प्यारी मिलि खाय ॥३५
विकास मंजरी सैय्या रची, विनती करी जब आय ।
तब प्यारी प्रिय दोऊ मिलि, पौढ़े सैय्या माहि ॥ ३६
गौर स्याम निज अंग हैं, निल पित वसन अनूप ।
नव घन में आनि मिली, थिर दामिनी रूप ॥३७
दुहुँ मिलि पौढ़े तव, भुजा परस्पर मेलि ।
नव तमाल में लपटि रही, मानों कंचन वेलि ॥३८
इह विधि विहरे सदा, वृन्दावन के माहि ।
श्री गुरु कृपा ह्वै है तब, देखन कौं पाहि ॥३९
जब गुरु देव कृपा करि, सिद्ध देह कौं देहि ।
सेवा में नियुक्त करि, अपनौ करि कैं लेंहि ॥४०
जो जानें यह पद्धति. कृष्ण भजन कौ सार ।
वह उतरें भव समुद्र कौं, यह जानौ निरधार ॥४१
कृष्ण प्रेम पावै सदा, कृष्ण भजन में लीन ।
कृष्ण बिना जीवै नहीं, ज्यों जल तरसै मीन ॥४२
इहि विधि साधन करें, साधक देह के माहिं ।
सिद्ध देह में हरि मिले, निश्चय जानो ताहि ॥४३
इह पद्धति कह्यौ सब साधक भजन के काज ।
सुनैं सुनावैं जो कोऊ हरि मिले संग समाज ॥४४
संवत अठारह सौ चालिसा पूरण फागुन मास ।
इह पद्धति पूरण भयौ, पूजै मन की आस ॥४५

इति श्रीभजनपद्धतिग्रंथे रात्रिविहारलीला
वर्णनं नाम अष्टम विभाग:
सम्बत् १८५० स्व अक्षर मिदं गोकुल
दासस्य शुभमस्तु ।

भजनपद्धतिग्रन्थकार की गुरुप्रणालिका—

श्रीश्रीजीवगोस्वामीजी
|
श्रीकृष्णदासगोस्वामीजी
|
श्रीनन्दकुमारगोस्वामी
|
श्रीव्रजकुमारगोस्वामी
|
श्रीलालावृन्दावनजी
|
श्रीगोपीरमणगोस्वामीजी
|
श्रीगोस्वामीनवलालजी
|
श्रीगोविन्दलालजी गोस्वामी
|
ग्रन्थकार

अब तक प्रकाशक के द्वारा प्रकाशित

ग्रन्थ संख्या	१०२
व्रजभाषा में	४०
(सानुवाद) संस्कृतभाषा में	६२
	१०२
समीक्षा	२
कुल संख्या	१०४

पुष्पराज प्रेस, मथुरा।